CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन विरासत

JAIN HERITAGE

(भारतीय जैन मिलन द्वारा वर्ष 2009-10 ई० (वी.नि.सं. 2535-36) को
'जैन इतिहास संस्कृति वर्ष' के रूप में मनाये जाने
के उपलक्ष्य में प्रकाशित)

4928. सी

डा. कपूर चन्द जैन
डा. (श्रीमती) ज्योति जैन

प्रकाशक :
भारतीय जैन मिलन, क्षेत्र संख्या 07

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12·4

4928. स्व

जैन विरासत

JAIN HERITAGE

(भारतीय जैन मिलन द्वारा वर्ष 2009-10 ई0 (वी.नि.सं. 2535-36) को 'जैन इतिहास संस्कृति वर्ष' के रूप में मनाये जाने के उपलक्ष्य में प्रकाशित)

परिकल्पना एवं प्रस्तुति :

डा. कपूर चन्द जैन

डा. (श्रीमती) ज्योति जैन

प्रकाशक :

भारतीय जैन मिलन, क्षेत्र संख्या 07

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक :
जैन विरासत (Jain Heritage)
(भारतीय जैन मिलन द्वारा वर्ष 2009-10 ई. (वी.नि.सं. 2535-36) को 'जैन इतिहास संस्कृति वर्ष' के रूप में मनाये जाने के उपलक्ष्य में प्रकाशित)

परिकल्पना एवं प्रस्तुति :
डॉ. कपूर चन्द जैन
रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, श्री कुन्द-कुन्द जैन पी. जी. कालिज
खतौली-251201 (उ.प्र.), मो. : 9412678256

डॉ. (श्रीमती) ज्योति जैन
सह-सम्पादिका, जैन सन्देश, संस्कार सागर, तीर्थंकर वाणी आदि, सर्वोदय, जैन मण्डी, खतौली-251201

प्रकाशक :
वीर अजित प्रसाद जैन,
क्षेत्रीय मंत्री, क्षेत्र संख्या 07, (हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर), C/o छोटे लाल मेहरचंद जैन, गुड बाजार, रेवाडी, हरियाणा, फोन - 01274-224371, मो. - 09896437271 .

सर्वाधिकार सुरक्षित :
लेखक-(लिखित अनुमति के बिना पुस्तक या उसका अंश छापना निषिद्ध है)

प्रथम संस्करण : नवम्बर 2009 ई., 1500 प्रतियाँ
पुर्न मुद्रण : जनवरी 2010 ई., 2200 प्रतियाँ

मूल्य : 30 रू. (पुनः प्रकाशनार्थ)

प्राप्ति स्थान :
1. श्री दि. जैन लाल मन्दिर, चांदनी चौक, दिल्ली-110 006
   सम्पर्क : 011-23253638
2. श्री चन्द्रप्रभ दि.जैन. अतिशय क्षेत्र, तिजारा, जिला अलवर, राज.-301411
   सम्पर्क : 01469-262119, 262407
3. डॉ. कपूर चन्द्र जैन, श्री कुन्द कुन्द जैन, पी.जी. कॉलेज, खतौली-251201
   जिला मुजफ्फनगर (उ.प्र.) सम्पर्क : 09412678256
4. श्री अजित प्रसाद जैन, C/o छोटे लाल मेहरचंद जैन, गुड बाजार, रेवाडी
   हरियाणा, फोन - 01274-224371, मो. - 09896437271.
5. श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर, सत्यम गैस के सामने, ए.बी.रोड, इंदौर (म.प्र.)
   फोन : 0731-2571851

मुद्रक :
दीप प्रिंटर्स, 70ए, रामा रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110015.
मो. : 09871196002

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

'भारतीय जैन मिलन' ने वर्ज़ 2009-10 (वी.नि.सं. 2535-36) को 'जैन इतिहास एवं संस्कृति वर्ष' के रूप में मनाने का संकल्प व्यक्त किया है। इस अवसर पर प्राय: सभी शाखाओं द्वारा विभिन्न स्तरों पर सेमिनार, गोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आदि के आयोजन किये जा रहे हैं। ये आयोजन प्राय: अस्थायी होते हैं, आवश्यकता है एक ऐसे कार्यक्रम की जो स्थायी हो और जैन संस्कृति की सुरभि सर्वत्र फैला सके। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के विकास में जैनों द्वारा दिये गये योगदान/अवदान को रेखांकित करने के लिए एक वृहद् ग्रन्थ प्रकाशन की आवश्यकता आज सर्वत्र अनुभव की जा रही है। जैन मिलन ने डा. कपूरचन्द और डा. (श्रीमती) ज्योति जैन द्वारा लिखित अत्यन्त अल्पकाय पुस्तक 'हमारी संस्कृति हमारी पहचान' का प्रकाशन अपने महावीर जी अधिवेशन के अवसर पर किया था।

क्षेत्र संख्या 07 के सभी पदाधिकारियों, शाखाओं के सदस्यों का विचार बना कि क्यों न इस अवसर पर हमारा क्षेत्र भी किसी पुस्तक का प्रकाशन करे। हमने इतिहासविद्, संस्कृति कर्मी और "स्वतंत्रता संग्राम में जैन" जैसे वृहद्काय और प्रामाणिक ग्रन्थ के लेखकद्वय डा. कपूर चन्द और डा. ज्योति जैन से सम्पर्क कर अपना मन्तव्य बताया तथा अपने बजट की भी चर्चा की। हमें हार्दिक प्रसन्नता और संतोष है कि डाक्टरद्वय ने हमारे अनुरोध को स्वीकार कर पुस्तक हमें प्रकाशनार्थ दी है।

हम जानते हैं कि जैनों के इतिहास और योगदान को रेखांकित करने के लिए यह बहुत अल्प प्रयास है फिर भी 'अकरणात् मन्दकरणं श्रेय:' (न करने की अपेक्षा थोड़ा करना भी कल्याणकारी है) की उक्ति के अनुसार जो कुछ बन सका है, किया है। हम डाक्टरद्वय के आभारी हैं और आशा करते हैं कि जैन मिलन के सभी सदस्य तथा अन्य महानुभाव इस कृति को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़कर अपने गौरवशाली इतिहास से अभिभूत होंगे और यत्र-तत्र पड़े जैन संस्कृति के अवशेषों/पाण्डुलिपियों के संरक्षण की ओर अग्रसर होंगे।

जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेश जैन 'रितुराज' और महामंत्री श्री जयचन्द जैन के भी हम आभारी हैं, जिनका सक्रिय सहयोग क्षेत्र संख्या 07 को मिलता रहता है। हमारा सभी पाठकों तथा सविशेष जैन मिलन के सदस्यों से निवेदन है कि-

अहिंसक जैन संस्कृति को व्यापक बनाने के लिए तथा जन कल्याण की दृष्टि से सेमिनार, गोष्ठी, स्कूली बच्चों के बीच भाषण, कार्यशाला आदि का आयोजन कीजिए और जैन संस्कृति के अवशेषों/पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए कटिबद्ध होइये।

हम उन सभी शाखाओं के पदाधिकारियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अग्रिम प्रतियाँ क्रय कर हमें सहयोग दिया है। इनके नाम हैं-

भारतीय जैन मिलन, अम्बाला छावनी	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, रेवाडी	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, गोविंदगढ़	200 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, सोनीपत	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, जालंधर शहर	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, मलेरकोटला	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, चंडीगढ़	100 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, गुडगांवा	50 प्रतियाँ
भारतीय जैन मिलन, धारुहेड़ा	50 प्रतियाँ

वीर अरविन्द जैन
अम्बाला छावनी
क्षेत्रीय अध्यक्ष

वीर अजित प्रसाद जैन
रेवाड़ी
क्षेत्रीय मंत्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पादकीय

"इतिहास प्रदीपेन मोहावरणघातिना।
सर्वलोक धृतं गर्भं यथावत्संप्रकाशयेत्॥"

"किस्मए अजमते माजी को न मुहम्मिल समझो।
कौमें जाग जाती हैं, अक्सर इन्हीं अफसानों से॥"

साहित्य मनीषियों ने अपनी संस्कृति और इतिहास को जानने और सुरक्षित रखने का सन्देश इन पंक्तियों में दिया गया है क्योंकि इतिहास के माध्यम से ही हम यह जानने-समझने में सक्षम होते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

जैन इतिहास और संस्कृति का भूतकाल समुज्ज्वल रहा है। राष्ट्र के विकास में जैनों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य, संस्कृति, कला, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज व्यवस्था, वाणिज्य, व्यापार, चिन्तन-मनन, वास्तु, संस्थाओं की स्थापना-संचालन, शिक्षालयों, नि:शुल्क भोजनालयों, देवालयों, धर्मशालाओं की स्थापना आदि सभी क्षेत्रों में जैनों का योगदान अविस्मरणीय है। इतिहास की रक्षा के लिए सर्वाधिक शिलालेखों का लेखन प्राय: जैन बन्धुओं ने कराया है। अहिंसा की रक्षा के लिए तो जैन कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। फिर भी हमारी चर्चा नहीं होती, इसका मूल कारण है 'हमने अपने योगदान को न तो प्रकाशित किया और न ही संरक्षित।'

'भारतीय जैन मिलन' ने वर्ष 2009-10 को 'जैन इतिहास एवं संस्कृति' वर्ष घोषित किया है। इस अवसर पर हमारी एक लघु पुस्तिका 'हमारी संस्कृति हमारी पहचान' केन्द्रीय जैन मिलन ने प्रकाशित की थी। जैन संस्कृति के अवदान को रेखांकित करने के लिए वह प्रयास एक बिन्दु मात्र था। हमारे पास ऐसा बहुत कुछ है जो राष्ट्र के सामने लाना आवश्यक है। धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अजित प्रसाद जी रिवाडी ने जब उक्त पुस्तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखी तो उन्होंने कहा इसे यदि थोड़ा और बढ़ाकर आप दे दें तो हम प्रकाशित करने को तैयार हैं। उनका अपना बजट था, अपनी सीमायें थीं।

तदनुसार यह लघुकाय पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। बहुत बड़े इतिहास को थोड़े शब्दों में समेटना कितना कठिन है, यह लेखक ही समझ सकता है। हमने प्रामाणिकता का पूरा ध्यान रखा है। हमारी इच्छा थी कि पूरी पुस्तक रंगीन छपे, किन्तु प्रकाशकों की अपनी सीमाएं हैं। फिर भी डाक टिकटों वाले पृष्ठों को रंगीन ही छापा गया है। हम आशा करते हैं कि पाठक इसे पढ़कर जैन संस्कृति के गौरव से अपने को गौरवान्वित अनुभव करेंगे और जैन इतिहास और संस्कृति के संरक्षण में अग्रसर होंगे।

श्री अजित प्रसाद जैन, जैन मिलन की केन्द्रीय कार्यकारिणी तथा क्षेत्र संख्या 07 की कार्यकारिणी और सदस्यों का भी हम आभार व्यक्त करते हैं। आइये

नई पीढ़ी को आज दें एक नया उपहार।
'जैन विरासत' देखकर हो गौरव संचार।।
आगे भी कुछ कार्य का मन में जगे विकल्प।
राष्ट्र-धर्म रक्षार्थ लें आज सभी संकल्प।।

डा. कपूर चन्द जैन
डा. ज्योति जैन

राष्ट्रीयता

प्रत्येक देश को स्वाधीन रहने का जन्म सिद्ध अधिकार है, उस अधिकार को जो छीनना चाहे, उसका सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सामना करना ही राष्ट्रीयता है।

पं. चैनसुखदास न्यायतीर्थ (जयपुर)
(जैन सन्देश, मथुरा राष्ट्रीय अंक, जनवरी 1947)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय	3
सम्पादकीय	5
णमोकार महामन्त्र	9
भरत के नाम पर भारतवर्ष	10
सिन्धुघाटी की सभ्यता और जैन	11
जैन मूर्तिकला की प्राचीनता	12
प्राचीन लिपि ब्राह्मी	13
प्राचीनतम शिलालेख	14
जैन मूर्ति परम्परा-1	15
जैन मूर्ति परम्परा-2	16
प्रतिदिन देवदर्शन	17
पानी छानकर पीना	18
रात्रि भोजन का त्याग	19
पांच अणुव्रत	20
मृत्यु भी महोत्सव है : सल्लेखना	21
अनेकान्तवाद और स्याद्वाद	22
भावों का थर्मामीटर : लेश्या	23
संसार दशा	24
डाक टिकटों पर जैन संस्कृति	25-28
गांधी जी और जैन-धर्म	29
श्रीमद् राजचन्द्र और गांधी जी	30
दानवीर भामाशाह	31
आशाशाह	31
अहिंसक युद्ध	32
जैन शहीद	33-34

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन क्रान्तिकारी	35
संविधान सभा में जैन	36
भारतीय संविधान में प्राणीमात्र के प्रति दया की भावना	37
भारतीय संविधान में भगवान् महावीर का चित्र	38
राष्ट्रगान में जैन	39
जैन सिक्के	40
जैन सरस्वती	41
सम्राट चन्द्रगुप्त और उनकी समाधि	42
दिल्ली का विश्वविख्यात परिंदों का अस्पताल	43
चित्तौड़ का कीर्तिस्तम्भ (जयस्तम्भ)	44
दिलवाड़ा के जैन मन्दिर	45
रणकपुर का आदिनाथ मंदिर	46
दिल्ली का ऐतिहासिक लाल मंदिर	47
ऐलोरा की गुफाएँ	48
भूगोल की अनुपम रचना-जम्बूद्वीप	49
जैन दर्शन का अनुपम ग्रन्थ-तत्त्वार्थसूत्र	50
विदेशों में जैन मूर्तियाँ	51
जैन प्रतीक	52

अहिंसा मिसाइल ला सकती है विश्वशान्ति

'सत्य-अहिंसा ऐसी मिसाइल है, जिससे पूरी दुनियां में शान्ति स्थापित की जा सकती है।'

—महामहिम राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

(13-14 जनवरी, 2005 को रुदही (लखनऊ) में एक बच्चे कोमल सिंह द्वारा) पूछे गये प्रश्न 'ऐसी कौन सी मिसाइल है जिससे विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है' के जवाब में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमोकार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

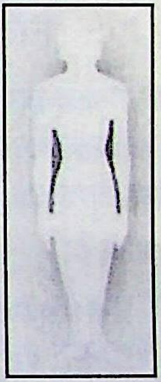

सिद्ध जी

अरिहन्त जी

आचार्य जी

उपाध्याय जी

साधु जी

णमोकार महामंत्र ऐसा मंत्र है जो किसी जाति, धर्म या सम्प्रदाय से सम्बन्धित नहीं है। इसमें उन भव्यात्माओं को नमस्कार किया गया है, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर अपना कल्याण किया तथा हमें उपदेश देकर हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया (णमो अरिहंताणं), जिन्होंने कठोर तपश्चर्या के द्वारा कर्मों का नाशकर सीधे मोक्ष पद पाया (णमो सिद्धाणं), जो संघ का संचालन कर साधकों को तैयार करते हैं (णमो आयरियाणं), जो अन्य साधकों को अध्ययन कराते हैं (णमो उवज्झायाणं), तथा जो साधनारत साधक हैं। (णमो लोए सव्वसाहूणं)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरत के नाम पर भारतवर्ष

तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। जैन साहित्य के अतिरिक्त मार्कण्डेय - कूर्म - ब्रह्माण्ड - विष्णु - स्कन्द आदि पुराणों तथा श्रीमद् भागवत् से इस तथ्य की पुष्टि होती है।

लिंगपुराण में लिखा है -

हिमाद्रेर्दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्।
तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः॥४७।२४

श्रीमद्भागवत् में उल्लेख है -

येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठः गुणश्रवासीत् । येनेदं वर्षं भारतमिति व्यपदिशन्ति ॥ ५/४/९

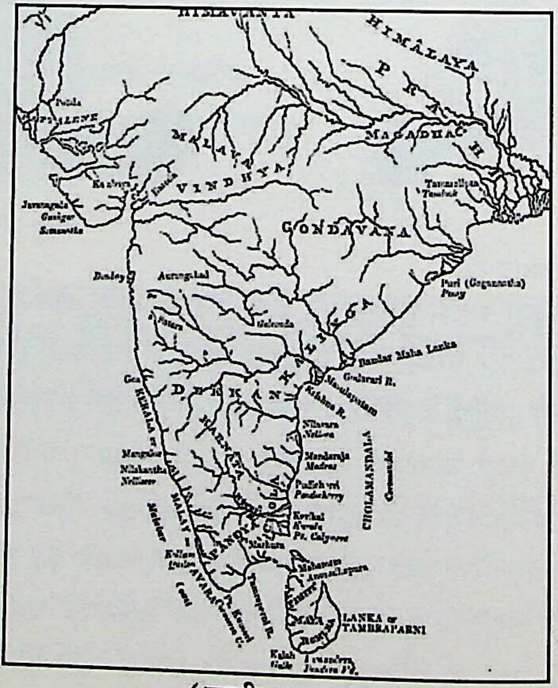

(प्राचीन भारत)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिन्धुघाटी की सभ्यता और जैन

सिन्धु घाटी की सभ्यता अत्यन्त प्राचीन मानी जाती है। हड़प्पा और मोहन जोदड़ो से कुछ नग्न मूर्तियां मिली हैं, जिन्हें विश्व प्रसिद्ध इतिहासविद् राम प्रसाद चन्दा आदि ने ऋषभदेव और अन्य तीर्थंकरों की कायोत्सर्ग मूर्तियां माना है।

श्री चन्दा ने मार्डन रिव्यू जून 1932 में प्रकाशित लेख में कहा है - **''सिन्धु घाटी से प्राप्त मोहरों पर बैठी अवस्था में अंकित देवताओं की मूर्तियां ही योग की मुद्रा में नहीं हैं, किन्तु खड़ी अवस्था में अंकित मूर्तियां भी योग की कायोत्सर्ग मुद्रा को बतलाती हैं। मथुरा म्यूजियम में दूसरी शती की कायोत्सर्ग में स्थित एक ऋषभदेव जिन की मूर्ति है। इस मूर्ति की शैली से सिन्धु से प्राप्त मोहरों पर अंकित खड़ी हुई देवमूर्तियों की शैली बिल्कुल मिलती है। ....ऋषभ या वृषभ का अर्थ होता है बैल और ऋषभदेव तीर्थंकर का चिन्ह बैल है। मोहर नं. ३ से ५ तक के ऊपर अंकित देवमूर्तियों के साथ बैल भी अंकित है जो ऋषभ का पूर्ण रूप हो सकता है।''**

(मोहन जोदड़ो से प्राप्त एक सील)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मूर्तिकला की प्राचीनता

मोहन जोदड़ो से एक तीर्थंकर मूर्ति का धड़ प्राप्त हुआ है (चित्र संख्या-1) तथा पटना म्यूजियम में संग्रहीत लोहानीपुर (पटना) बिहार से प्राप्त मौर्यकालीन (ई. पूर्व तीसरी शताब्दी) मूर्ति (चित्र संख्या-2) भी जैन मूर्तिकला की प्राचीनता को सिद्ध करती हैं।

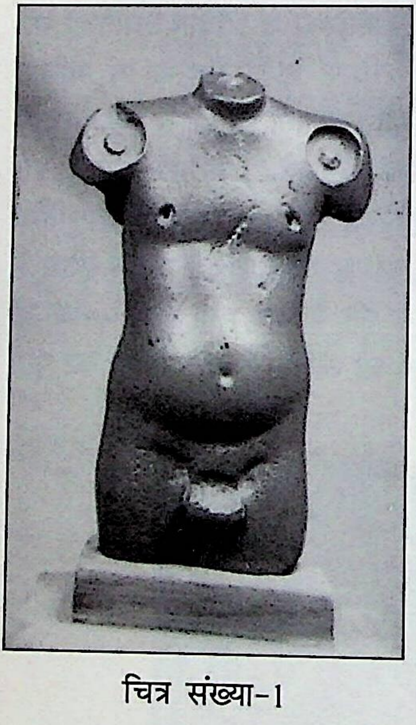

चित्र संख्या-1

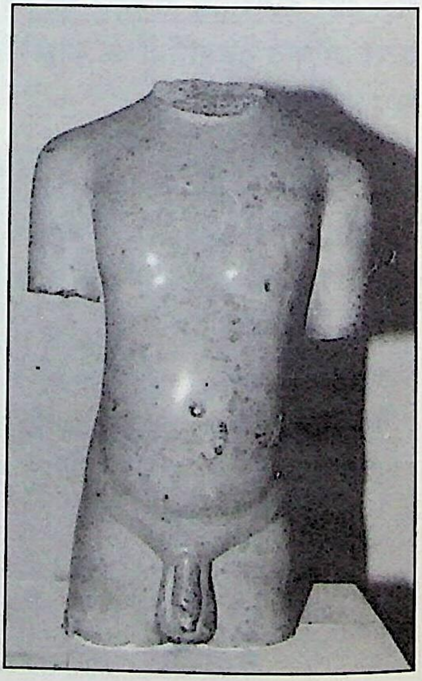

चित्र संख्या-2

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन लिपि ब्राह्मी

लिपि और अंकों के ज्ञान के बिना आज के जीवन की कल्पना की जा सकती है क्या? आज के मानव को जैन धर्म और तीर्थंकर ऋषभदेव की सबसे बड़ी देन लिपि और अंक का उपदेश देना है। प्राचीन ग्रन्थों में उल्लेख है कि तीर्थंकर ऋषभदेव की ब्राह्मी और सुन्दरी दो पुत्रियां थीं। बाल वय में वे ऋषभदेव की गोद में जाकर बैठ गईं। ऋषभदेव ने उनके विद्याग्रहण का काल जानकर उन्हें लिपि और अंकों का ज्ञान दिया। ब्राह्मी दायीं ओर और सुन्दरी बांयी ओर बैठी थी। ब्राह्मी को वर्णमाला का बोध कराने के कारण लिपि बांयी से दांयी ओर लिखी जाती है। सुन्दरी को अंक का बोध कराने के कारण अंक दायीं से बायीं ओर इकाई, दहाई..... के रूप में लिखे जाते हैं। ऋषभदेव ने सर्वप्रथम ब्राह्मी को वर्णमाला का बोध कराया था, इसी कारण सभी भाषा वैज्ञानिक एकमत से स्वीकार करते हैं कि विश्व की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी है।

(खण्डगिरि उदयगिरि में ब्राह्मी लिपि का प्राचीन शिलालेख)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीनतम शिलालेख

विश्व के अत्यन्त प्राचीन शिलालेखों में कलिंग के चेदिवंशीय दिग्विजयी जैन सम्राट् खारवेल द्वारा लिखाया गया उड़ीसा का खण्डगिरि उदयगिरि का शिलालेख है, जो गुफा में छत पर सत्रह पंक्तियों में लिखा है। लिपि ब्राह्मी और भाषा प्राकृत है। प्रारम्भ णमो अरहंतानं (1) णमो सवसिद्धानं से होता है। इसी प्रकार एक स्थान पर सर्वाधिक (लगभग 500) शिलालेख प्राप्त होने का गौरव श्रवणबेलगोल को प्राप्त है।

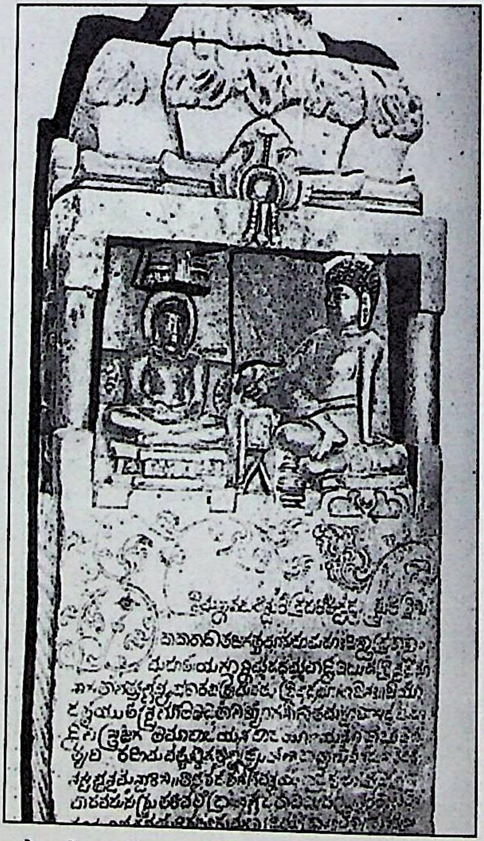

श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पर्वत का एक शिलालेख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मूर्ति परम्परा-1

सम्पूर्ण भारत और विदेशों में जैन तीर्थंकरों और जैन देवी देवताओं की मूर्तियां बहुतायत से प्राप्त होती हैं जो जैन संस्कृति की व्यापकता को सिद्ध करती हैं। एक शिलाखण्ड से निर्मित विश्व की विशालतम मूर्ति श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) स्थित भ. गोम्मटेश्वर बाहुबली की है। 26 जनवरी, 2005 को गणतंत्र दिवस की परेड में कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित भ. गोम्मटेश्वर वाली झांकी को प्रथम पुरस्कार मिला था। भ. गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा के सहस्राब्दी महोत्सव पर भारत सरकार ने 9 फरवरी, 1981 को एक रुपये मूल्य का डाकटिकट जारी किया था।

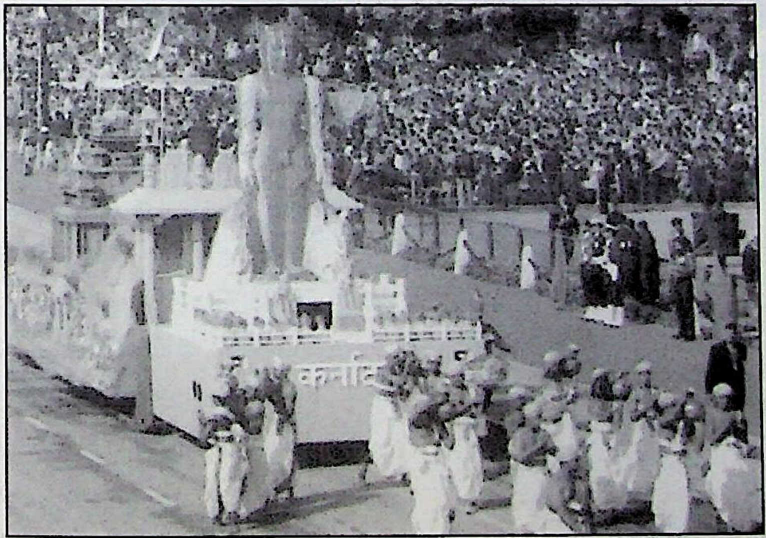

(26 जनवरी, 2005 को गणतन्त्र दिवस परेड में प्रथम पुरस्कार प्राप्त झांकी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन मूर्ति परम्परा-2

इसी प्रकार एक पत्थर से निर्मित विश्व की विशालतम पद्मासन प्रतिमा (ग्वालियर) म०प्र० स्थित भ० पार्श्वनाथ की है।

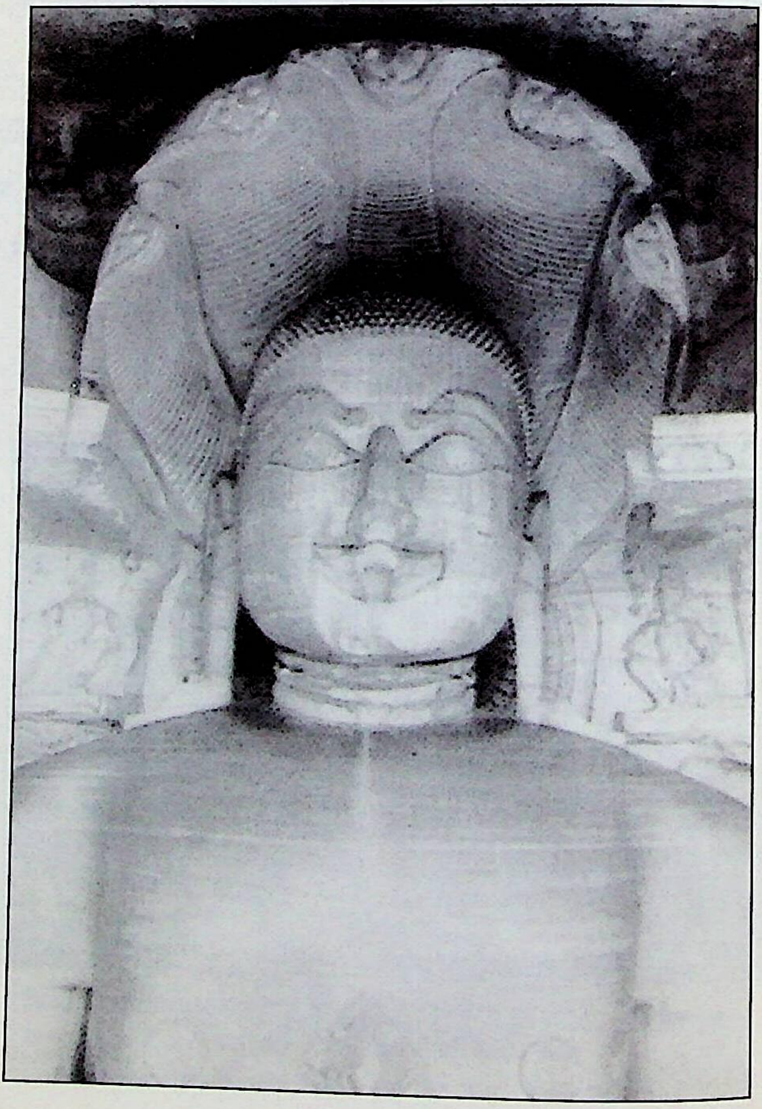

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन जीवन पद्धति-1

प्रतिदिन देवदर्शन

प्रतिदिन देवदर्शन जैनों की एक पहचान है। जैनों के आराध्य देव-शास्त्र-गुरु हैं। जैन मंदिरों में जो मूर्तियां विराजमान रहती हैं। उनमें 24 तीर्थंकर प्रमुख हैं।

तीर्थ का अर्थ है घाट अर्थात् जहां से संसार-सागर से पार हुआ जाये। उसके करने वाले तीर्थंकर हैं। ये जिन भी कहलाते हैं। क्योंकि ये इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करते हैं (जयति इति जिन:)।

एक परम्परा के अनुसार मंदिरों में प्रतिमा न होकर शास्त्र (धार्मिक आगम ग्रंथ) रखे होते हैं। मंदिर या स्थानकों में जाने से हमारी भावनायें पवित्र होती हैं। जैसे ही हम घर से मंदिर जाने का संकल्प/विचार कर तैयारी प्रारंभ करते हैं हमारे मन से बुरे भाव तिरोहित हो जाते हैं। अच्छे भावों का प्रादुर्भाव होता है। मन में यदि कोई विकल्प भी आते हैं तो हम सोचते हैं। 'मैं तो मंदिर जा रहा हूं मन पवित्र रहे।' इस प्रकार देवदर्शन मनोवैज्ञानिक रूप से हमारे भावों को शुद्ध बनाता है। शास्त्रों का अध्ययन करने से धार्मिक ज्ञान में वृद्धि होती है। हेयोपादेय (अच्छा-बुरा) का ज्ञान होता है। बुरे कार्यों से हटकर अच्छे कार्यों में प्रवृत्ति होती है। क्या करना है? क्या नहीं करना है? यह विवेक जागृत होता है। हमारे गुरु आचार्य, उपाध्याय और साधु हैं। आचार्य संघ का संचालन करते हैं। उपाध्याय पढ़ाते हैं। आचार्य, उपाध्याय, साधु सभी साधनारत रहते हैं इनके दर्शन करने से मन प्रसन्न होता है। सद्विचारों का आगमन होता है तथा उपदेश सुनकर कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

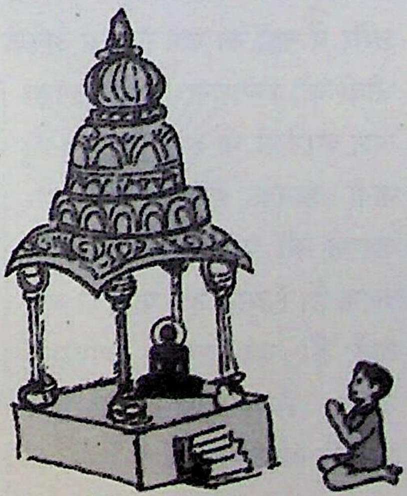

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन जीवन पद्धति-2

पानी छानकर पीना

जैनों की तीन पहचान हैं – पानी छानकर पीना, रात्रि भोजन का त्याग और प्रतिदिन देवदर्शन करना।

आज वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि पानी स्वयं में जीव है तथा उसमें अनेक सूक्ष्मतम (अत्यन्त सूक्ष्म) जीव रहते हैं। वैज्ञानिकों ने सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा प्रयोग दिखाकर सिद्ध किया है कि एक बूंद में लगभग 36,450 जीव होते हैं। जैनाचार्यों के अनुसार असंख्यात जीव होते हैं।

आज पानी की कमी से सभी परिचित हैं। बार-बार कहा जा रहा है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा। अतः आवश्यकता से अधिक पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

आज जल तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। डॉक्टर्स का कहना है कि पेट संबंधी एवं अन्य रोगों के बढ़ने का प्रमुख कारण प्रदूषित जल है।

मानव समाज के लिए जैन धर्म-संस्कृति की बहुत बड़ी देन 'पानी छानकर पीना' है। छानकर पानी पीने से उसमें रहने वाले सूक्ष्म जीव हमारे शरीर में नहीं जा पाते जिससे अनेक बीमारियों से बचाव होता है और सूक्ष्म जीवों की विराधना अर्थात् उनका नाश करने से भी हम बच जाते हैं। पानी छानना हमारी दया और करुणा की भावना को विकसित करता है। जिससे हम पापों से बच जाते हैं। यह हमारी अहिंसक जीवन शैली और अहिंसक संस्कृति की द्योतक है।

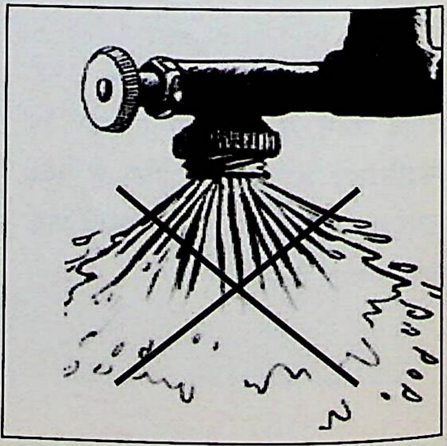

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन जीवन पद्धति-3

रात्रि भोजन का त्याग

'रात्रि भोजन न करना' जैनों की पहचान है। यह अहिंसा की रक्षा/पालन करने का एक उपाय है। सूर्यास्त के साथ ही वातावरण में असंख्यात सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। रात्रि में भोजन करने से वे जीव भोजन के साथ पेट में चले जाते हैं, इससे सूक्ष्म जीवों की हिंसा होती है और स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः सूर्यास्त से पूर्व ही भोजन कर लेना चाहिए।

आज आहार विशेषज्ञ और डाक्टर्स भी यह कहने लगे हैं कि उत्तम स्वास्थ्य की दृष्टि से सोने से चार घण्टे पूर्व भोजन कर लेना चाहिए। जिससे उसका पाचन अच्छी तरह से हो सके और आहार-ऊर्जा भी प्राप्त हो सके। विद्युत प्रकाश व्यवस्था में अनेक सूक्ष्म कीडे पतंगे भोजन में शामिल हो जाते हैं। शादी-विवाह जैसे आयोजनों में तो भोजन दिन में करना/कराना आवश्यक है। रात्रि भोजन त्याग से जहां हमारा स्वास्थ्य उत्तम रहता है वहां मानवता के सर्वोच्च सिद्धांत '**अहिंसा**' का परिपालन होता है।

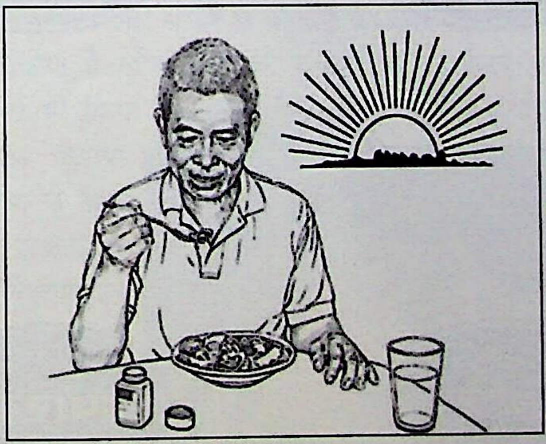

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन जीवन पद्धति-4

पांच अणुव्रत

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच अणुव्रत जैन दर्शन के मूल सिद्धान्त हैं। जैसे मुझे अपने प्राण प्रिय हैं वैसे ही दूसरों को भी हैं, ऐसा सोचकर प्राणीमात्र को कष्ट नहीं पहुंचाना न कष्ट पहुंचाने का भाव करना अहिंसा है। जो जैसा है उसे वैसा ही कहना तथा हितकारी मीठे और प्रिय वचन बोलना सत्य है। किसी की गिरी हुई, पड़ी हुई वस्तु को न उठाना न उठाने का भाव करना, सरकार के टैक्स की चोरी का भाव न करना अचौर्य है। अपनी पत्नी/पति के सिवा अन्य से रागात्मक भाव न रखना ब्रह्मचर्य और आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना अपरिग्रह है। वर्तमान की अनेक समस्याओं के समाधान का मूल इनमें ढूंढा जा सकता है।

अहिंसा

सत्य

अचौर्य

ब्रह्मचर्य

अपरिग्रह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन जीवन पद्धति-5

मृत्यु भी महोत्सव है : सल्लेखना

मानव संस्कृति के लिए जैन दर्शन की अनुपम देन 'समता भाव पूर्वक देह का विसर्जन करने की कला' भी है, इसे सल्लेखना कहा गया है। मृत्यु को जहां भय के रूप में देखा जाता है वहां जैन दर्शन में उसे महोत्सव कहा गया है। क्योंकि आत्मा अजर-अमर है। परिवर्तन केवल देह का होना है। अत: भय कैसा ? जैसे हम अन्य कार्यों की तैयारी करते हैं वैसे ही यथा समय मृत्यु की भी तैयारी प्रारम्भ कर देना चाहिए।

यदि कोई ऐसा उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा या रोग आ जावे जिसका कोई समाधान न हो तब तो अवश्य ही संकल्प पूर्वक देह का विसर्जन करना चाहिए।

कुछ लोग देहविसर्जन की इस 'सल्लेखना' विधि को आत्मघात कहते हैं। दोनों में महान् अन्तर है। आत्मघात तीव्र क्रोध में किया जाता है। जबकि सल्लेखना क्रोध, मान, माया, लोभ आदि बुरे भावों के त्याग के बाद ली जाती है। आत्मघात घनीभूत दु:ख या पीड़ा में किया जाता है जबकि सल्लेखना स्वयं इच्छा से सुखपूर्वक ली जाती है। आत्मघात में एक बार में देह का घात किया जाता है जबकि सल्लेखना धीरे-धीरे सबके सामने शरीर को कृश करते हुए ली जाती है। नियम सल्लेखना का उत्कृष्ट अधिकतम समय 12 वर्ष बताया गया है। आत्मघात पाप और संसार में भटकने का कारण है जबकि सल्लेखना एक धार्मिक क्रिया है और संसार के दु:खों को दूर करने का उपाय है। आत्मघात कभी भी किया जा सकता है जबकि सल्लेखना उपाय से रहित, उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा या भयानक रोग के आने पर ही ली जा सकती है।

चित्र में सल्लेखना रत साधु की सेवा में संलग्न कुछ साधकों को दिखाया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकान्तवाद और स्याद्वाद

मानव समाज को जैन धर्म की सबसे बड़ी देन अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद का मूल है सहिष्णुता। किसी भी वस्तु या विषय को अनेक दृष्टिकोणों से देखो, ऐसा मत सोचो कि जो मैं कहता या सोचता हूं वही सही है। राम दशरथ की दृष्टि से पुत्र, सीता की दृष्टि से पति, लव की दृष्टि से पिता, लक्ष्मण की दृष्टि से भाई हैं। एक गांव में कुछ अंधे थे। वहां एक हाथी आया सभी उसे देखने गये, अंधे भी गये, उन्होंने उसे छूकर देखा। घर आकर किसी ने पूछा हाथी कैसा था? जिस अंधे ने पैर छूकर देखा था वह बोला खम्भे जैसा था, पूंछ वाले ने कहा रस्सी जैसा था, कान वाले ने कहा सूप जैसा था....... विवाद होने लगा। अनेकान्तवादी ने उनके विवाद को सुना और कहा सभी अपनी-अपनी दृष्टि से सही हैं।

'जो मैं सोचता हूं वही सही है ऐसा न सोचकर जो मैं कहता हूं वह भी सही है जो आप कहते हैं वह भी सही हो सकता है' ऐसा चिन्तन सहज की विवादों का निपटारा कर देता है।

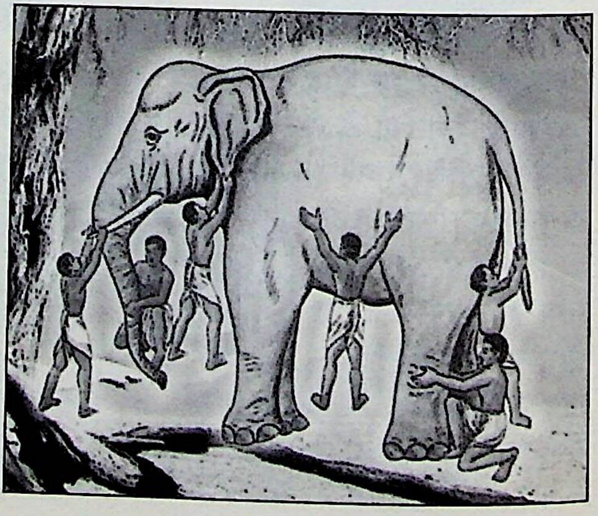

अनेकान्तवाद को सात नयों या वचनों द्वारा भाषा में प्रकट करना ही स्याद्वाद (स्यात् का सिद्धान्त) है। 7 नयों द्वारा प्रतिपादित वस्तु स्वरूप एकदम सत्य होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावों का थर्मामीटर : लेश्या

जीव/ व्यक्ति के परिणाम या भाव क्षण-क्षण में बदलते रहते हैं। शुभ से अशुभ, अशुभ से शुभ, शुभ से शुभ, अशुभ से अशुभ की ओर हमारी भावनायें आती-जाती रहती हैं। एक ही दृश्य/वस्तु को देखकर या उसके बारे में सोचकर अलग-अलग व्यक्तियों की भावनायें अलग-अलग हो सकती हैं। एक ही व्यक्ति की भावना भी क्षण भर में बदल सकती है। व्यक्ति के भाव पल-प्रतिपल बदलते रहते हैं, जिनकी गणना करना असंभव है। जैन दर्शन में लेश्या के माध्यम से व्यक्ति के भावों को मापने का प्रयत्न किया गया है। छह मित्रों ने फलों से लदे वृक्ष को देखा और फल खाने की इच्छा व्यक्त की। वे वृक्ष के नीचे पहुंचे और विचार करने लगे कि फल कैसे खाये जायें ?

प्रथम ने कहा हमें जड़ सहित सम्पूर्ण वृक्ष काट देना चाहिए। दूसरे ने विचार व्यक्त किया, नहीं! वृक्ष की टहनियां काट देना चाहिए। तीसरे ने कहा - वृक्ष की शाखा-प्रशाखायें काट देना चाहिए। चौथे ने कहा फलों से लदी शाखायें काटना चाहिए। पांचवें ने कहा - नहीं, सिर्फ पके हुए फलों को ही तोड़ना चाहिए। तव छठे व्यक्ति ने अंतिम समाधान दिया-हम वृक्ष को किसी प्रकार का नुकसान क्यों पहुंचायें। खाने के लिए पर्याप्त फल जमीन पर बिखरे पड़े हैं। इनमें प्रथम व्यक्ति में क्रूरता, हिंसा, स्वार्थ के साथ विनाश की भावना निहित है। ऐसा व्यक्ति औरों के अस्तित्व को मिटाकर चलता है। उसे कृष्ण लेश्या वाला कहा गया है। आगे उत्तरोत्तर भाव शुद्ध होते गये हैं। इन्हें क्रमशः नील, कपोत, पीत, पद्म कहा गया है। अन्तिम छठे को शुक्ल लेश्या कहा गया है। ऐसा व्यक्ति अपने साथ संसार का भी कल्याण करता है। अतः मन में सदैव शुभ विचार लाना चाहिए।

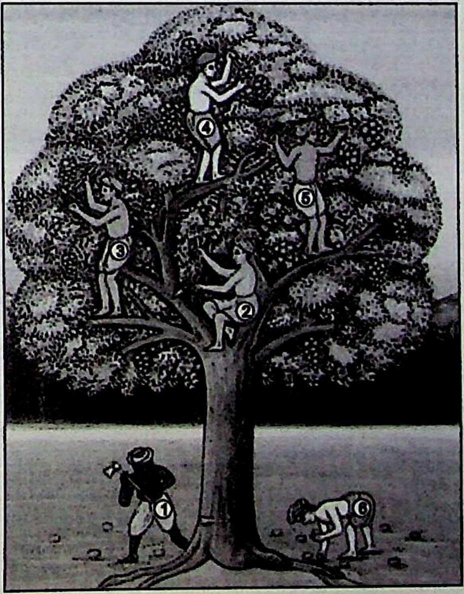

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकान्तवाद और स्याद्वाद

मानव समाज को जैन धर्म की सबसे बड़ी देन अनेकान्तवाद है। अनेकान्तवाद का मूल है सहिष्णुता। किसी भी वस्तु या विषय को अनेक दृष्टिकोणों से देखो, ऐसा मत सोचो कि जो मैं कहता या सोचता हूं वही सही है। राम दशरथ की दृष्टि से पुत्र, सीता की दृष्टि से पति, लव की दृष्टि से पिता, लक्ष्मण की दृष्टि से भाई हैं। एक गांव में कुछ अंधे थे। वहां एक हाथी आया सभी उसे देखने गये, अंधे भी गये, उन्होंने उसे छूकर देखा। घर आकर किसी ने पूछा हाथी कैसा था? जिस अंधे ने पैर छूकर देखा था वह बोला खम्भे जैसा था, पूंछ वाले ने कहा रस्सी जैसा था, कान वाले ने कहा सूप जैसा था....... विवाद होने लगा। अनेकान्तवादी ने उनके विवाद को सुना और कहा सभी अपनी-अपनी दृष्टि से सही हैं।

'जो मैं सोचता हूं वही सही है ऐसा न सोचकर जो मैं कहता हूं वह भी सही है जो आप कहते हैं वह भी सही हो सकता है' ऐसा चिन्तन सहज की विवादों का निपटारा कर देता है।

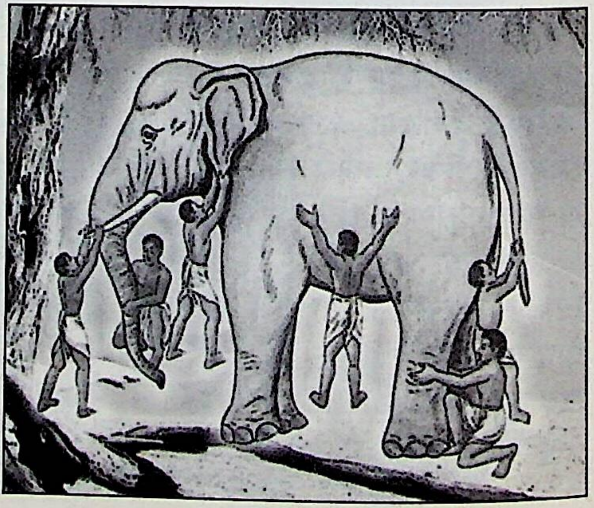

अनेकान्तवाद को सात नयों या वचनों द्वारा भाषा में प्रकट करना ही स्याद्वाद (स्यात् का सिद्धान्त) है। 7 नयों द्वारा प्रतिपादित वस्तु स्वरूप एकदम सत्य होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावों का थर्मामीटर : लेश्या

जीव/ व्यक्ति के परिणाम या भाव क्षण-क्षण में बदलते रहते हैं। शुभ से अशुभ, अशुभ से शुभ, शुभ से शुभ, अशुभ से अशुभ की ओर हमारी भावनायें आती-जाती रहती हैं। एक ही दृश्य/वस्तु को देखकर या उसके बारे में सोचकर अलग-अलग व्यक्तियों की भावनायें अलग-अलग हो सकती हैं। एक ही व्यक्ति की भावना भी क्षण भर में बदल सकती है। व्यक्ति के भाव पल-प्रतिपल बदलते रहते हैं, जिनकी गणना करना असंभव है। जैन दर्शन में लेश्या के माध्यम से व्यक्ति के भावों को मापने का प्रयत्न किया गया है। छह मित्रों ने फलों से लदे वृक्ष को देखा और फल खाने की इच्छा व्यक्त की। वे वृक्ष के नीचे पहुंचे और विचार करने लगे कि फल कैसे खाये जायें ?

प्रथम ने कहा हमें जड़ सहित सम्पूर्ण वृक्ष काट देना चाहिए। दूसरे ने विचार व्यक्त किया, नहीं! वृक्ष की टहनियां काट देना चाहिए। तीसरे ने कहा - वृक्ष की शाखा-प्रशाखायें काट देना चाहिए। चौथे ने कहा फलों से लदी शाखायें काटना चाहिए। पांचवें ने कहा - नहीं, सिर्फ पके हुए फलों को ही तोड़ना चाहिए। तव छठे व्यक्ति ने अंतिम समाधान दिया-हम वृक्ष को किसी प्रकार का नुकसान क्यों पहुंचायें। खाने के लिए पर्याप्त फल जमीन पर बिखरे पड़े हैं। इनमें प्रथम व्यक्ति में क्रूरता, हिंसा, स्वार्थ के साथ विनाश की भावना निहित है। ऐसा व्यक्ति औरों के अस्तित्व को मिटाकर चलता है। उसे कृष्ण लेश्या वाला कहा गया है। आगे उत्तरोत्तर भाव शुद्ध होते गये हैं। इन्हें क्रमशः नील, कपोत, पीत, पद्म कहा गया है। अन्तिम छठे को शुक्ल लेश्या कहा गया है। ऐसा व्यक्ति अपने साथ संसार का भी कल्याण करता है। अतः मन में सदैव शुभ विचार लाना चाहिए।

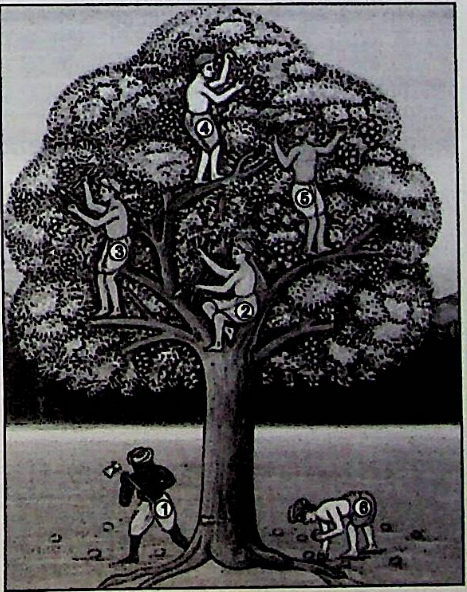

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार दशा

'संसार असार है' जैसी कहावतें प्रायः सुनने को मिलती हैं पर इन पर अमल करना बड़ा कठिन होता है। हम सभी संसारी प्राणी हैं और संसार दुःखों का ही दूसरा नाम है। कोई तन से, कोई मन से, कोई धन से, कोई पड़ोसी से, कोई परिवार से इस तरह कोई न कोई कारण से दुखी है। संसार में कोई सुखी नहीं है। आज तक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसे कोई दुःख न हो और जो यह कहे कि मैं पूर्ण सुखी हूँ।

जैन संस्कृति में प्रचलित निम्न चित्र मानव मात्र को संदेश दे रहा है कि क्षणिक सुखों में निमग्न मत होओ, अन्यथा अनंत दुखों को भोगना पड़ेगा। संसार के दुखों का नाश करने का उपाय सोचो। चित्र में एक कुआँ है जिसमें काले नाग फन फैलाये खड़े हैं। अचानक एक व्यक्ति कुऐं के पास आकर गिरने लगता है वह कुए के समीप खड़ी तथा कुऐं में लटकी डाल पकड़कर कुऐं में लटक जाता है। इस डाल को दो चूहे काट रहे हैं। डाल के ऊपर मधुमक्खी के छत्ते से शहद की बूंद टपक रही है, मुंह खोलकर वह उसका स्वाद भी ले रहा है। एक तरफ गिरने का डर तो दूसरी तरफ मुंह में शहद की बूंदे। हम संसार के क्षणिक सुखों में मग्न हो अपने उद्देश्यों से भटक रहे हैं हम सबकी दशा चित्र में चित्रित व्यक्ति की तरह ही है। हमें इससे बचना है और अपने मानव जीवन को सार्थक बनाना है।

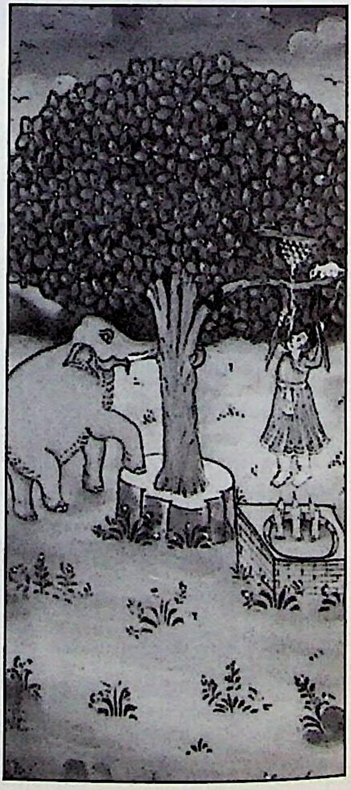

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डाक टिकटों पर जैन संस्कृति

भारत में डाक सेवा की सार्वजनिक शुरूआत 1837 ई. में हुई। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित भारत 2006, पृष्ठ 172 के अनुसार अक्टूबर 1854 को भारत की डाक प्रणाली की वह बुनियादी पड़ी, जिस पर वह आज खड़ी है। आज हमारे देश में डाकघरों की संख्या लगभग 1,60,000 है। डाक विभाग पोस्ट कार्ड, अंतर्देशीय, लिफाफा आदि के साथ समय-समय पर विभिन्न मूल्यवर्ग के डाक टिकट छापता है। डाक टिकटों पर महापुरुषों, मन्दिरों, भवनों, लता-वृक्षों, पशु-पक्षियों, विशेष सन्देशों या समसामयिक घटनाओं, उत्सवों को दर्शान वाले चित्र प्रकाशित होते हैं। जब कोई डाक टिकट जारी होता है तो उसके साथ प्रथम दिवस आवरण, विवरणिका तथा प्रथम दिवस मोहर (विरूपण) भी जारी होते हैं। विशेष अवसरों पर केवल विशेष आवरण तथा/या मोहर भी जारी किये जाते हैं। डाकटिकट संग्रह की अभिरुचि को फिलेटेली कहते हैं, इसे अभिरुचियों का राजा कहा गया है।

भारत सरकार ने समय-समय पर जैन संस्कृति/व्यक्ति विषयक डाक टिकट तथा विशेष आवरण-विरूपण आदि जारी किये हैं अब तक लगभग 30 डाक टिकट जारी किये जा चुके हैं। विशेष आवरणों की संख्या 100 के ऊपर है। पूर्व जर्मनी में भी भ. महावीर के चित्र को दर्शाता डाक टिकट जारी किया गया था। सभी आवरण और ब्रोशर दें तो डाक टिकटों पर ही पुस्तक पूरी हो जायेगी अतः एक विशेष आवरण तथा लगभग सभी डाक टिकट यहाँ दिये जा रहे हैं। सम्भवतः ऐसा पहली बार हो रहा है, जब प्रायः सभी डाक टिकट अपने मूल रंगों में छापे जा रहे हैं।

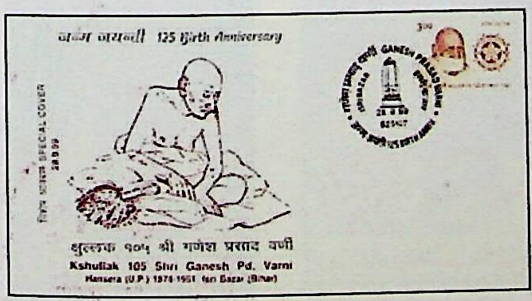

(यह आवरण सुप्रसिद्ध जैन संत क्षुल्लक 105 श्री गणेश प्रसाद वर्णी की 125 वीं जन्म जयन्ती पर जारी किया गया।)

1979 में भारतीय चित्रकला श्रृंखला के अन्तर्गत भ. महावीर के चित्र को दर्शाता पूर्व जर्मनी में जारी किया गया डाक टिकट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मई, 1935 में किंग जार्ज पचम के राज्यारोहण की रजत जयन्ती के अवसर पर जारी सात टिकटों के सेट में सवा आने के टिकट पर कलकत्ता के प्रसिद्ध शीतलनाथ जैन मंदिर का चित्र

13 नवम्बर, 1974 को तीर्थंकर भ. महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव पर जारी 25 पैसे मूल्य का डाक टिकट

29 अगस्त, 1991 को प्रसिद्ध जैन मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज की स्मृति में जारी एक रुपये मूल्य का डाक टिकट

6 अप्रैल, 2001 को भ. महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव पर जारी तीन रुपये मूल्य का डाक टिकट

15 अगस्त, 1949 को जारी 15 रु. के डाक टिकट पर विश्वप्रसिद्ध शत्रुंजय के जैन मंदिर का चित्र

9 फरवरी, 1981 को भ. गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा के सहस्राब्दी महोत्सव पर जारी एक रुपये मूल्य का डाक टिकट

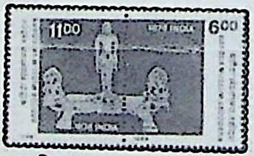

20 दिसम्बर, 1994 को बड़ौदा संग्रहालय की 100वीं वर्षगाठ पर जारी दो टिकटों का जोड़ा, जिसमें संग्रहालय में रखी प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की तांबे की मूर्ति को दर्शाया गया है।

20 अक्टूबर, 1998 को अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक प्रसिद्ध जैन मुनि आचार्य श्री तुलसी की स्मृति में जारी तीन रुपये मूल्य का डाक टिकट

30 दिसम्बर, 1972 को प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. विक्रम अम्बालाल साराभाई (जैन) की प्रथम पुण्य तिथि पर जारी 20 पैसे मूल्य का डाक टिकट

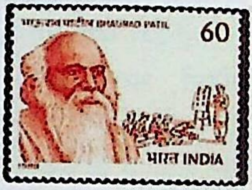

9 मई, 1988 को प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा अध्यापक श्री भाउराव पाटिल पर जारी 60 पैसे मूल्य का डाक टिकट

28 जनवरी, 1998 को प्राकृत एवं जैनागम के विश्व विख्यात विद्वान् डा. जगदीश चन्द्र जैन की स्मृति में जारी दो रुपये मूल्य का डाक टिकट

31 दिसम्बर, 2000 को दानवीर राजा भामाशाह पर जारी तीन रुपये मूल्य का डाक टिकट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

21 जुलाई, 2001 को जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त पर जारी चार रुपये मूल्य का डाक टिकट

17 नवम्बर, 2001 को भारतीय सिनेमा जगत की प्रसिद्ध हस्ती 'जैन समाजरत्न' उपाधि से विभूषित व्ही. शान्ताराम पर जारी चार रुपये मूल्य का डाक टिकट

9 अगस्त, 2002 को पूज्य आनन्द ऋषि जी महाराज के जन्म दिवस पर जारी चार रुपये मूल्य का डाक टिकट

30 जून, 2004 को तेरापंथ के संस्थापक आचार्य भिक्षु पर जारी पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकट

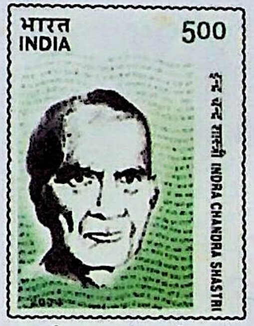

27 मई, 2004 को सुप्रसिद्ध जैन अन्वेषक इन्द्रचन्द्र शास्त्री पर जारी पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकट

23 नवम्बर, 2004 को सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री वालचंद हीराचंद (जैन) पर जारी पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकट

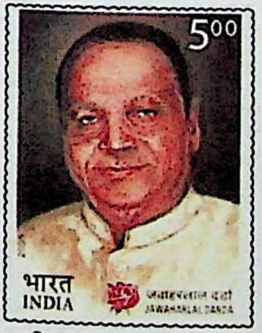

2 दिसम्बर, 2005 को वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार श्री जवाहरलाल दर्डा (जैन) पर जारी पाँच रुपये मूल्य का डाक टिकट

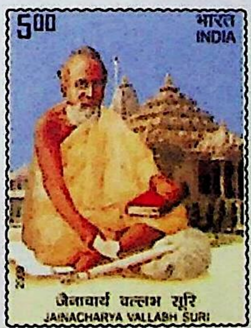

21 फरवरी, 2009 में जैनाचार्य वल्लभ सूरि जी महाराज पर जारी डाक टिकट

6 मार्च, 1999 को खजुराहो के सहसाब्दी महोत्सव पर जारी (खजुराहो के पार्श्वनाथ जैन मंदिर पर अंकित अप्सरा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1 जुलाई, 1966 को भारतीय पुरातत्त्व श्रृंखला पर जारी (खजुराहो के पार्श्वनाथ जैन मंदिर पर अंकित पत्र लिखती नायिका)

27 जुलाई, 1978 को कच्छ म्यूजियम पर जारी (गुजरात के प्राचीन जैन मंदिर का ऐरावत हाथी)

10 जनवरी, 1975 को विश्व हिन्दी सम्मेलन तथा 12 अप्रैल 1975 को विश्व तेलगु सम्मेलन पर जारी पल्लू (वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली) की जैन सरस्वती)

28 फरवरी, 2009 को श्री हरख चन्द नाहटा पर जारी डाक टिकट।

14 अक्टूबर 2009 को रणकपुर मन्दिर पर जारी डाक टिकट

14 अक्टूबर 2009 को दिलवाड़ा मन्दिर पर जारी डाक टिकट

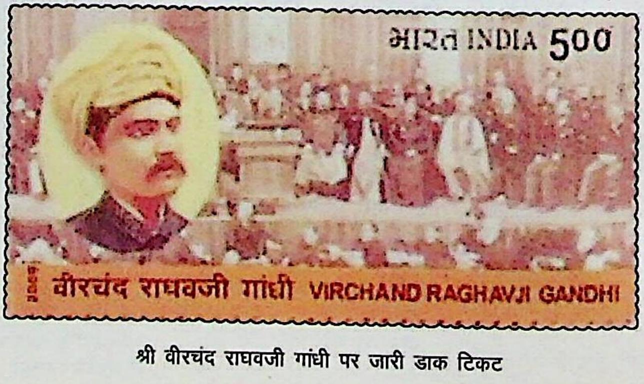

श्री वीरचंद राघवजी गांधी पर जारी डाक टिकट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गांधी जी और जैन-धर्म

महात्मा गांधी जैन धर्म के अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य सिद्धान्तों से अत्यधिक प्रभावित थे। जब गांधी जी विदेश जाने लगे और माँ ने अनुमति नहीं दी, क्यों कि माँ को शंका थी कि यह विदेश जाकर मांस आदि का भक्षण करने लगेगा। तब एक जैन मुनि बेचर जी स्वामी आये और उन्होंने गाँधी जी को मांस, मदिरा व परस्त्री से दूर रहने की प्रतिज्ञा दिलाई। माँ ने जाने की अनुमति दी। इस तथ्य को गांधी जी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में पृष्ठ 32 पर लिखा है–

"बेचर जी स्वामी मोढ बनियों में से बने हुए एक जैन साधु थे। उन्होंने मदद की। वे बोले – 'मैं इस लड़के से इन तीनों चीजों के व्रत लिवाऊँगा। फिर इसे जाने देने में कोई हानि नहीं होगी।' उन्होंने प्रतिज्ञा लिवाई और मैंने माँस, मदिरा तथा स्त्री संग से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। माता जी ने आज्ञा दी।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमद् राजचन्द्र और गांधी जी

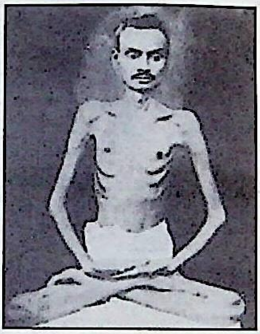

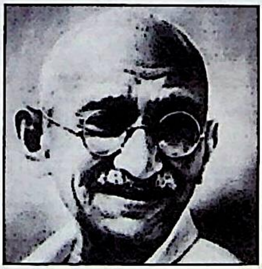

गांधी जी के जीवन में प्रसिद्ध आध्यात्मिक जैन सन्त श्रीमद् राजचन्द्र का गहरा प्रभाव था। जब दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को हिन्दू धर्म पर अनेक शंकाएँ हुई और उनकी आस्था डिगने लगी तब गांधी जी ने अपनी 33 शंकाएँ राजचन्द्र जी को भेजी। राजचन्द्र जी ने उनके जो उत्तर दिये उनसे गांधी जी की सत्य और अहिंसा में दृढ़ आस्था हो गई। स्वयं गांधी जी ने लिखा है 'मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले आधुनिक पुरुष तीन हैं - राजचन्द्र भाई ने अपने सजीव सम्पर्क से, टॉलस्टाय ने 'बैकुण्ठ तेरे हृदय में' नामक अपनी पुस्तक से और रस्किन ने 'अन्टु दिस लास्ट' - सर्वोदय नामक पुस्तक से मुझे चकित कर दिया।' (आत्मकथा, पृष्ठ-76)

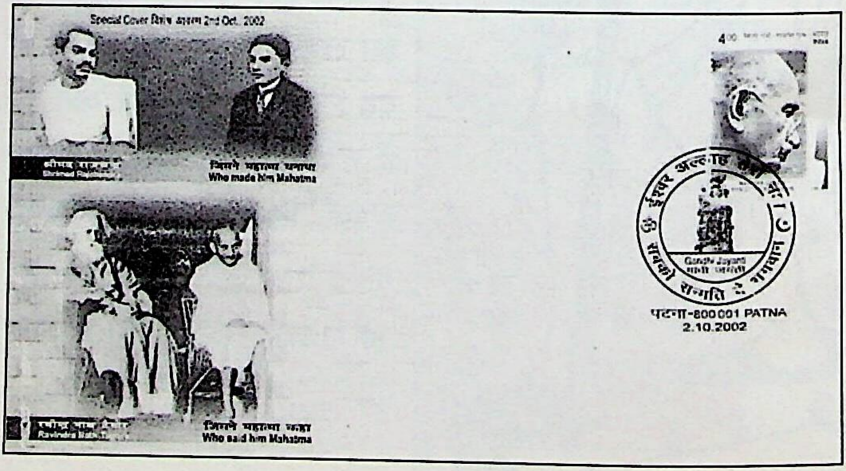

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

 49२8, सी.

दानवीर भामाशाह

हल्दी घाटी के युद्ध में पराजयके बाद महाराणा प्रताप जंगल व पहाड़ों में भटकते रहे। जब उन्होंने स्वदेश परित्याग का संकल्प कर लिया तब स्वदेशभक्त, स्वामीभक्त और मेवाड़ोद्धारक भामाशाह उनका रास्ता रोककर खड़ा हो गया और देशोद्धार के लिए उन्हें उत्साहित करने लगा। राणा नेकहा –'न मेरे पास धन है, न सैनिक और न साथी, किस बलबूते पर मैं देशोद्धार का प्रयास करूं।' भामाशाह ने तत्काल विपुल द्रव्य उनके चरणों में समर्पित कर दिया। वह धन इतना था जिससे 25000 सैनिकों का 12 वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। भामाशाह स्वामीभक्त और दानवीर होने के साथ जैन धर्म पर प्रगाढ श्रद्धा रखने वाला था।

आशाशाह

उदयपुर की पन्ना धाय जब अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बचाकर ले गई तो बनवीर के भय से उसे कोई आश्रय देने को तैयार नहीं हुआ। पन्ना धाय कुम्भलमेर के दुर्गपाल आशाशाह के पास पहुंची, जब आशाशाह ने असमर्थता जाहिर की तो उसकी मां झपटकर बोली 'तू कैसा वीर पुत्र है जो विपत्ति में भी किसी के काम नहीं आता, तुझे जीने का अधिकार नहीं.........' आशाशाह गद्‌गद् होकर माँ के चरणों में गिर पड़ा और उदयसिंह को अपना भतीजा बताकर उसकी रक्षा की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसक युद्ध

'युद्ध और अहिंसक' बडी विरोधी बात है यह। तीर्थंकर ऋषभदेव के तपस्यार्थ बन जाने पर भरत और बाहुबली के बीच सत्ता संघर्ष के लिए युद्ध की तैयारी होने लगी। दोनों ओर की सेनायें आमने सामने तन गई। बुद्धिमान मंत्रियों ने विचार किया कि 'व्यर्थ ही सेना मारी जायेगी अच्छा हो ये दोनों आपस में युद्ध करके हार-जीत का निर्णय कर लें।' दोनों के बीच तीन युद्ध हुए।

एक प्राचीन पाण्डुलिपि में चित्रित भरत- बाहुबली युद्ध के तीन चित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन शहीद-1

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जैनों ने भी महनीय योगदान दिया था। 20 जैन शहीद हुए। लगभग 5000 जैनों ने जेलों की दारुण यातनायें भोगी। 50 महिलायें भी जेल गईं। आर्थिक या अन्य सहयोग देने वालों की संख्या कई हजार है। प्रमुख जैन शहीद हैं - बहादुरशाह जफर के मित्र तथा उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने के कारण हांसी (हरियाणा) में 19 जून 1858 को फांसी पर लटकाये गये लाला हुकुम चंद जैन। सिन्धिया परिवार के खजांची तथा महारानी लक्ष्मीबाई को आर्थिक सहायता देने के कारण ग्वालियर (म.प्र.) के सर्राफा बाजार के नीम पर 22 जून 1858 को फांसी पर लटकाये गये अमर शहीद अमरचंद बांठिया (इनका शव तीन दिन तक लटका रहा था)। आरा के महन्त के मर्डर केस में जेल से ही मित्रों के नाम खून से मराठी भाषा में पत्र लिखने वाले तथा अन्तिम इच्छा के रूप में जिन दर्शन की इच्छा बताने वाले सोलापुर के मोतीचंद शाह को मार्च 1915 में फांसी पर लटका दिया गया था।

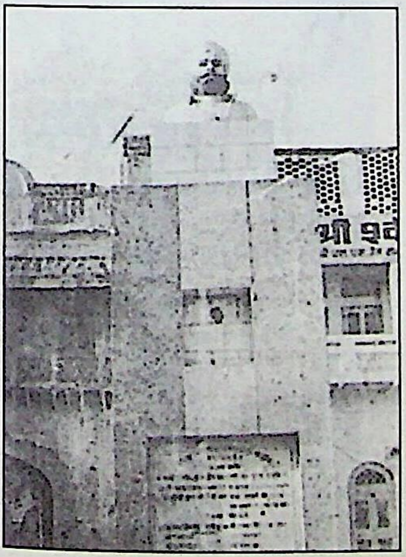

ला० हुक्मचन्द जैन की हासी स्थित प्रतिमा

अमर शहीद अमरचन्द बांठिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसक युद्ध

'युद्ध और अहिंसक' बडी विरोधी बात है यह। तीर्थंकर ऋषभदेव के तपस्यार्थ बन जाने पर भरत और बाहुबली के बीच सत्ता संघर्ष के लिए युद्ध की तैयारी होने लगी। दोनों ओर की सेनायें आमने सामने तन गई। बुद्धिमान मंत्रियों ने विचार किया कि 'व्यर्थ ही सेना मारी जायेगी अच्छा हो ये दोनों आपस में युद्ध करके हार-जीत का निर्णय कर लें।' दोनों के बीच तीन युद्ध हुए।

एक प्राचीन पाण्डुलिपि में चित्रित भरत- बाहुबली युद्ध के तीन चित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन शहीद-1

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में जैनों ने भी महनीय योगदान दिया था। 20 जैन शहीद हुए। लगभग 5000 जैनों ने जेलों की दारुण यातनायें भोगी। 50 महिलायें भी जेल गईं। आर्थिक या अन्य सहयोग देने वालों की संख्या कई हजार है। प्रमुख जैन शहीद हैं - बहादुरशाह जफर के मित्र तथा उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने के कारण हांसी (हरियाणा) में 19 जून 1858 को फांसी पर लटकाये गये लाला हुकुम चंद जैन। सिन्धिया परिवार के खजांची तथा महारानी लक्ष्मीबाई को आर्थिक सहायता देने के कारण ग्वालियर (म.प्र.) के सर्राफा बाजार के नीम पर 22 जून 1858 को फांसी पर लटकाये गये अमर शहीद अमरचंद बांठिया (इनका शव तीन दिन तक लटका रहा था)। आरा के महन्त के मर्डर केस में जेल से ही मित्रों के नाम खून से मराठी भाषा में पत्र लिखने वाले तथा अन्तिम इच्छा के रूप में जिन दर्शन की इच्छा बताने वाले सोलापुर के मोतीचंद शाह को मार्च 1915 में फांसी पर लटका दिया गया था।

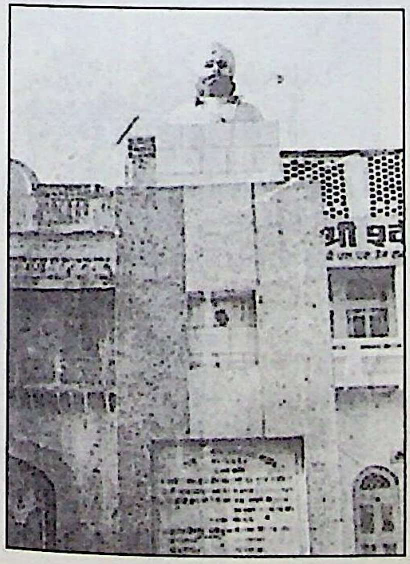

ला0 हुक्मचन्द जैन की हासी स्थित प्रतिमा

अमर शहीद अमरचन्द बांठिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन शहीद-2

अन्य जैन शहीद हैं - सिंघई प्रेमचंद जैन, दमोह (म.प्र.), सातापा टोपण्णावर, कड़वी शिवापुर (बेलगाम) कर्नाटक, उदय चंद जैन, मण्डला (म.प्र.), साबूलाल वैशाखिया, गढाकोटा (म.प्र.), कु. जयावती संघवी, अहमदाबाद (गुजरात), नाथालाल शाह, अहमदाबाद (गुजरात), अण्णा पत्रावले, सांगली (महाराष्ट्र), मगनलाल ओसवाल, इन्दौर (म.प्र.), भूपाल अणस्कुरे, ठिकपुर्ली (कोल्हापुर) महाराष्ट्र, कन्धीलाल जैन, सिलौण्डी (जबलपुर) म.प्र., मुलायम चंद जैन, जबलपुर (म.प्र.), चौ. भैयालाल जैन, दमोह (म.प्र.), चौथमल भण्डारी, उज्जैन (म0प्र0) भूपाल पण्डित, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), भारमल, कोल्हापुर (महाराष्ट्र), हरिश्चन्द्र दगडोवा, परभणी (महाराष्ट्र) आदि।

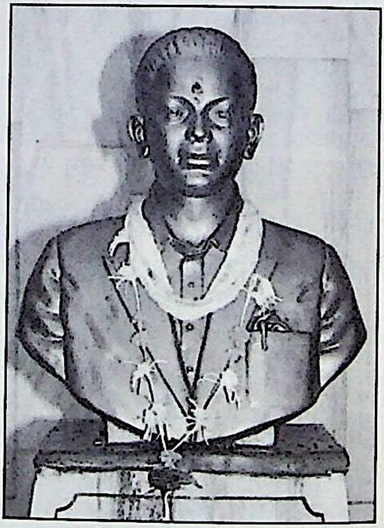

अमर शहीद अण्णा साहेब पत्रावले का सांगली (महाराष्ट्र) स्थित स्टेच्यू

अमर शहीद सिंघई प्रेमचन्द जैन दमोह (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन क्रान्तिकारी

जैन क्रान्तिकारियों में श्री अर्जुन लाल सेठी (जयपुर) राज., विमल प्रसाद जैन, दिल्ली, राजू ताई, सांगली (महाराष्ट्र), श्रीमती अंगूरी देवी, आगरा (उ.प्र.), मोती लाल तेजावत, उदयपुर (राज.), लीला बहन और रमा बहन (गुजरात) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री अर्जुन लाल सेठी (जयपुर)

श्री विमल प्रसाद जैन (दिल्ली)

क्रान्ति कन्या राजू ताई (सांगली)

श्रीमती अंगूरी देवी (आगरा)

श्री मोती लाल तेजावत (उदयपुर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संविधान सभा में जैन

भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। संविधान सभा लगभग 3 वर्ष (2वर्ष, 11 महीने, 17 दिन) कार्यरत रही। संविधान सभा में लगभग 350 सदस्य थे। 6 जैन सदस्य भी थे।

श्री अजित प्रसाद जैन, सहारनपुर
श्री बलवंत सिंह मेहता, उदयपुर
श्री भवानी अर्जुन खीमजी, कच्छ
श्री कुसुमकान्त जैन, इन्दौर
श्री रतनलाल मालवीय, सागर
श्री चिमन भाई चकु भाई शाह, सौराष्ट्र

श्री अजित प्रसाद जैन, सहारनपुर

श्री कुसुमकान्त जैन, इन्दौर

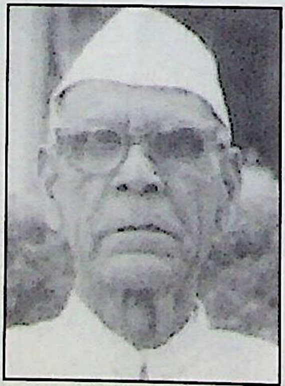

श्री बलवंत सिंह मेहता, उदयपुर

श्री रतनलाल मालवीय, सागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतीय संविधान में प्राणीमात्र के प्रति दया की भावना

अनुच्छेद 51 ए

भारतीय नागरिकों के मूल कर्तव्य

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दया भाव रखें।

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।

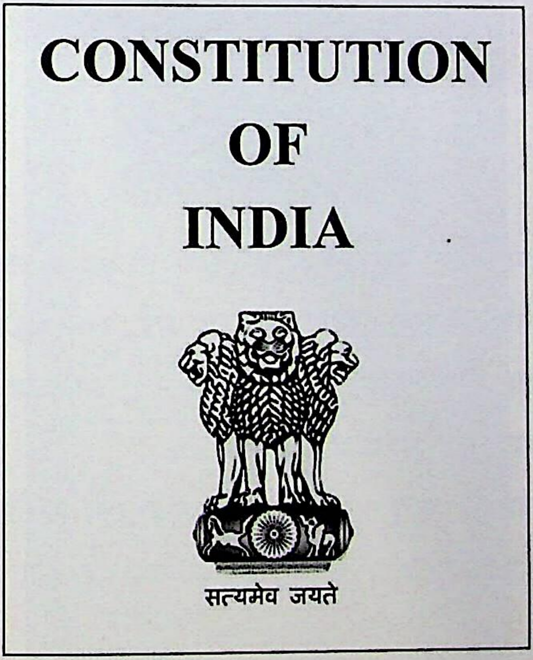

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतीय संविधान में भगवान् महावीर का चित्र

भारतीय संविधान की सुलिखित प्रति को सुन्दर चित्रों से सुसज्जित किया गया है। पृष्ठ 63 पर भ0 महावीर का चित्र है।

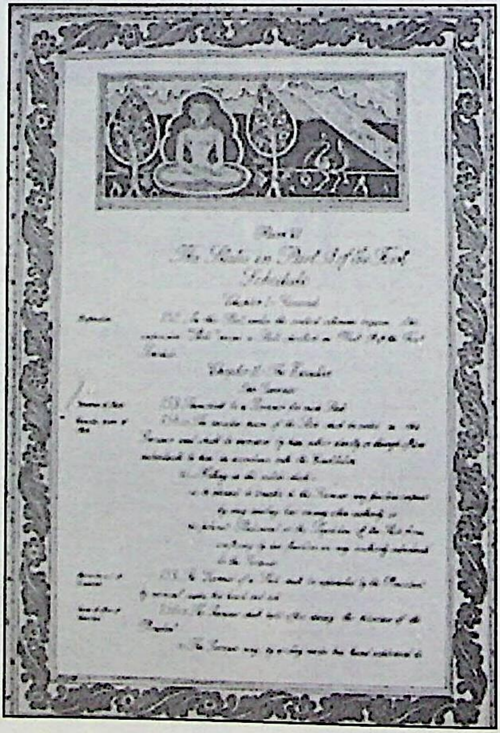

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्रगान में जैन

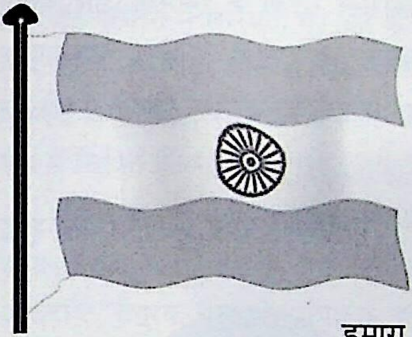

हमारा राष्ट्रगान गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'जनगणमन..... है।' इसकी रचना 5 पदों में हुई थी। प्रथम पद ही राष्ट्रगान के रूप में स्वीकृत है। दूसरे पद में जैन शब्द आया है। यथा –

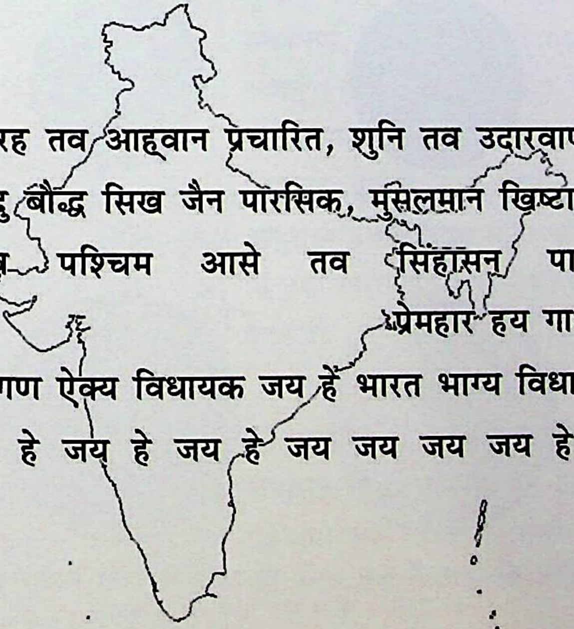

अहरह तव आह्वान प्रचारित, शुनि तव उदारवाणी
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसिक, मुसलमान खिष्टानी
पूरब पशिचम आसे तव सिंहासन पाशे
प्रेमहार हय गाथा
जनगण ऐक्य विधायक जय हे भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन सिक्के

भारत सरकार समय-समय पर विभिन्न मूल्यों के स्मारक और चलन वाले सिक्के जारी करती है। भ0 महावीर के 2600 वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर 2001 में सरकार द्वारा 100 रुपये का स्मारक और 5 रुपये का चलन सिक्का जारी किया गया था।

इसी अवसर पर पंजाब सरकार ने 10 ग्राम शुद्ध सोने और 50 ग्राम शुद्ध चांदी का सिक्का जारी किया था।

भारत सरकार द्वारा जारी 100 रू० का स्मारक सिक्का (ऊपर)
तथा 5 रू० का चलन सिक्का (नीचे)

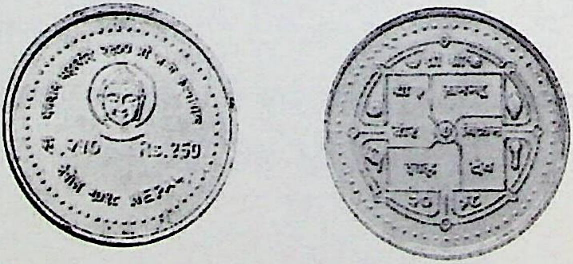

भ. महावीर की 2600वीं जन्म जयंती पर 2001 में नेपाल सरकार द्वारा जारी रू. 250/- मूल्य का चांदी का सिक्का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन सरस्वती

जैन परम्परा में सरस्वती को श्रुत की देवी होने से श्रुतदेवी और वाणी की देवी होने से वाग्देवी कहा गया है। वैदिक परम्परा में प्रचलित सरस्वती हाथ में वीणा लिए हंसवाहिनी रूप में चित्रित की गई है।

श्रुत देवी, वाग्देवी या जैन सरस्वती के चार हाथों में कमल, अक्षमाला, शास्त्र तथा कमण्डलु हैं, जो क्रमशः अन्तर्दृष्टि, वैराग्य, ज्ञान और संयम के प्रतीक हैं।

जैन सरस्वती (लाडनूँ) राजस्थान

वाग्देवी के शीर्ष पर छोटी सी जिन मूर्ति अंकित है। श्रुत देवी की एक कांस्यमूर्ति ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में है, जिसे राजा भोज ने 1035 ई0 में बनवाया था। पल्लू (राज.) से प्राप्त एक मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में है। राज्य संग्रहालय, हैदराबाद में भी एक मूर्ति है। लाडनूँ (राज.) के जैन मंदिर में स्थापित मूर्ति अपनी भाव-भंगिमा से अलग ही छटा बिखेरती है। ये सभी खड़ी मूर्तियां हैं। खजुराहो के पार्श्वनाथ मंदिर की बहिर्भित्ति पर तथा मथुरा में सरस्वती की बैठी मूर्तियां प्राप्त हैं।

विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर 10 जनवरी 1975 तथा विश्व तेलुगु सम्मेलन के अवसर पर 12 अप्रैल 1975 को जारी डाक टिकटों पर राष्ट्रीय संग्रहालय की जैन सरस्वती को दर्शाया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्राट चन्द्रगुप्त और उनकी समाधि

भारत वर्ष के इतिहास में प्रतापी सम्राट् चन्द्रगुप्त का नाम अमर है। ई.पू. चौथी शताब्दी में इस शक्तिशाली सम्राट् ने चाण्क्य के सहयोग से नन्दवंश का नाश कर मौर्य वंश की स्थापना की थी। सम्राट् चन्द्रगुप्त का अपना कुल 'मोरिय' आचार्य भद्रबाहु श्रुतकेवली का भक्त था।

सम्राट् चन्द्रगुप्त ने अपने जीवन के अन्तिम भाग में मुनिदीक्षा ली और उत्तरभारत से दक्षिण भारत प्रयाण किया। श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) के जिस पर्वत पर उन्होंने समाधिमरण किया था उसे आज भी 'चन्द्रगिरि' कहा जाता है। वहाँ उनके चरण बने हैं। चन्द्रगुप्त वसदि में 'भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कथा के पाषाण चित्र' (पत्थर पर उत्कीर्ण कर) के माध्यम से उनकी दक्षिण भारत यात्रा और गुरु भक्ति को दिखाया गया है। यह चित्र पाषाण चित्र कला का अद्भुत नमूना है।

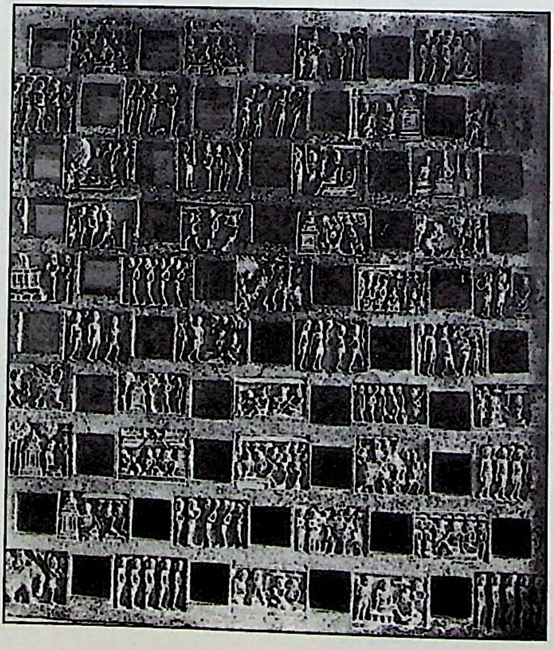

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिल्ली का विश्वविख्यात परिंदों का अस्पताल

जैन समाज अपनी अहिंसक भावना, दया, करुणा के लिए विख्यात है। यह दया और करुणा मात्र मानव के प्रति ही नहीं पशु और पक्षियों के प्रति भी है। मानव और पशुओं की चिकित्सा के लिए तो चिकित्सालय आपने सुने होंगे, किन्तु पक्षियों की चिकित्सा के लिए भी जैन समाज ने चिकित्सालय की स्थापना की। देश का यह अनूठा चिकित्सालय लगभग 80 वर्ष पूर्व श्री दि0 जैन लाल मंदिर परिसर, चांदनी चौक, दिल्ली में स्थापित किया गया था, जो आज विकसित और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों से युक्त होकर पक्षियों की सेवा कर रहा है।

यहाँ लाये गये बेजुबान बीमार पक्षी उपचार व देखभाल के पश्चात् डाक्टरों की देखरेख में खुले आसमान में स्वच्छन्द विचरण के लिए छोड़ दिये जाते हैं। प्रतिवर्ष लगभग 25 हजार पक्षियों की चिकित्सा यहाँ होती है। पत्राचार, टेलीफोन से भी दूर-दराज के पक्षियों की चिकित्सा के उपाय अनुभवी डाक्टर्स यहां से बताते हैं। उपचार के दौरान पक्षियों को शाकाहारी भोजन दिया जाता है। चौबीसों घण्टे कम्पाउण्डर व अन्य कर्मचारी यहाँ रहते हैं। दो पक्षी-डाक्टर स्थायी रूप से पक्षियों की चिकित्सा करते हैं। स्वस्थ पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था भी यहाँ है। है न अद्भुत अस्पताल !

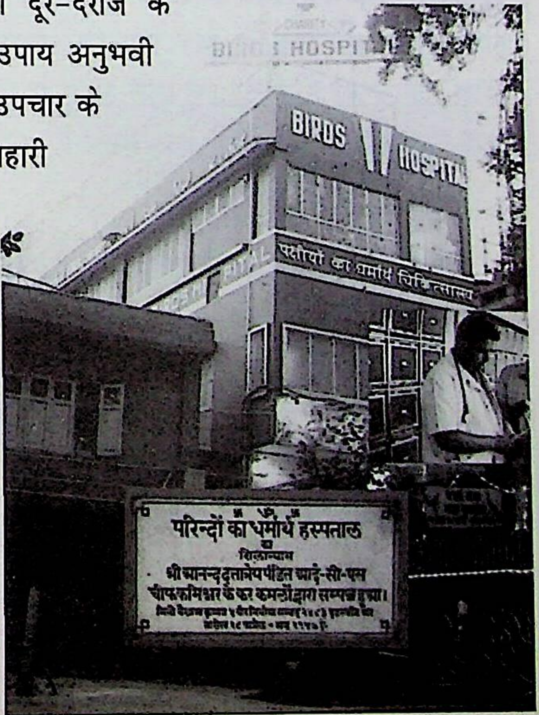

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्तौड़ का कीर्तिस्तम्भ (जयस्तम्भ)

राजस्थान के चित्रकूट नगर (चित्तौड़) में शाह जीजा द्वारा निर्मित भ0 आदिनाथ का कीर्तिस्तम्भ भारतीय स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। यह पाषाण निर्मित सतखना है। भीतर ऊपरी मंजिलों पर चढ़ने के लिए 67 सीढ़ियां हैं। स्तम्भ की बाहरी दीवारें कलापूर्ण मूर्तियों के अंकन से पूरित हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में शाह जीजा ने इसका निर्माण 'निजभुजोपार्जित वित्तबलेन' = स्वयं अपने हाथ से कमाये हुए द्रव्य से किया था। अन्य भी अनेक मंदिर उसने बनवाये थे। कुछ लोगों का मत है कि यह स्तम्भ पहले से बना था। शाह जीजा ने जीर्णोद्धार कराया था। इसी से प्रेरणा लेकर राणा कुम्भा ने विजय स्तम्भ का निर्माण कराया था।

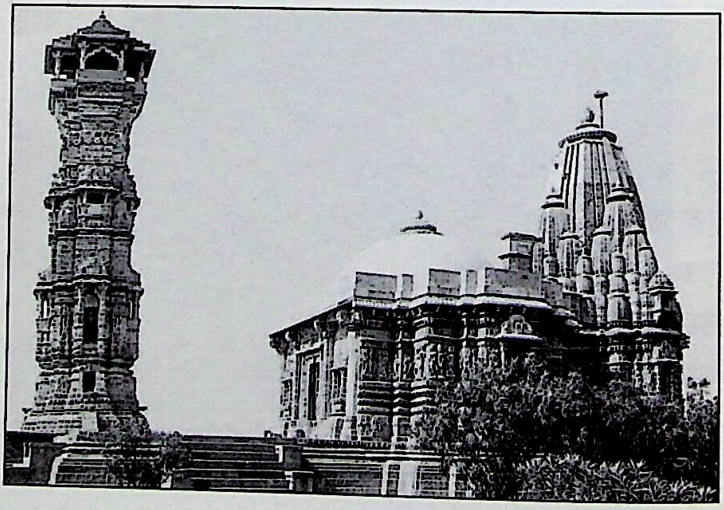

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिलवाड़ा के जैन मन्दिर

विश्व के आश्चर्यों में परिगणित दिलवाड़ा के जैन मन्दिर अपनी कलात्मक पच्चीकारी के लिए विख्यात हैं। दिलवाड़ा, आबू पर्वत से लगभग डेढ़ किमी पहाड़ की चोटी पर है। आबू पर्वत अजमेर- अहमदाबाद लाइन पर आबू रोड स्टेशन से 19 किमी पहाड़ी रास्ते की चढ़ाई पर है। यहाँ की प्राकृतिक दृश्यावली नयनाभिराम है। यह पर्वतीय पर्यटन केन्द्र है। यहां के जिनमंदिर शिल्पकला के मूर्तिमान निधान हैं। ये संगमरमर के बने हुए हैं। इनके स्तम्भों, दिलहों, तोरणों और छतों में पत्थरों पर अत्यन्त सूक्ष्म अंकन किया गया है। कला के इन अनूठे उपादानों को देखकर लगता है कि मानो कला की देवी इन पाषाणों में अवतरित हो गई है।

इन मंदिरों का निमार्ण मन्त्रीश्वर भ्रातृद्वय वस्तुपाल और तेजपाल ने 11-12 वीं शताब्दी में कराया था। कहा जाता है कि उन्होंने उस जमाने में 14 करोड़ स्वर्ण मुद्रायें इन मंदिरों को बनाने में व्यय की थीं। मंत्रीश्वर वस्तुपाल ने गुजराज के स्वराज्य को नष्ट होने से बचाने के लिए अपने जीवन में त्रेसठ बार युद्धभूमि में गुर्जर सैन्य का संचालन किया था। भारत सरकार ने दिलवाड़ा मंदिर पर 14 अक्टूबर, 2009 को डाक टिकट जारी किया है।

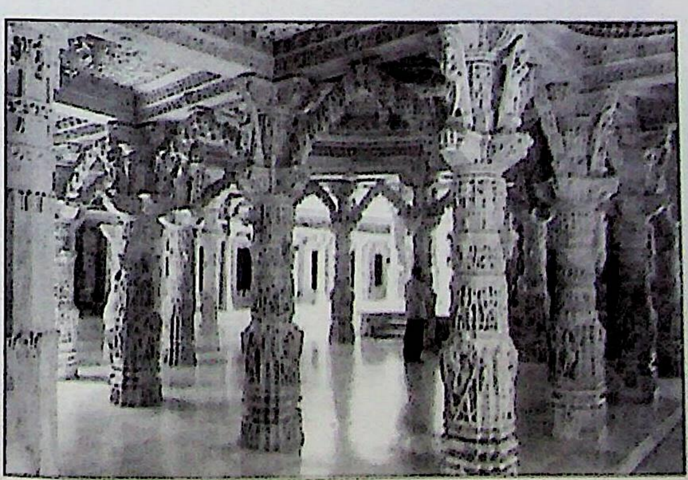

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणकपुर का आदिनाथ मंदिर

रणकपुर का आदिनाथ जिनमंदिर वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। पाली (राज.) जिले के सादड़ी कस्बे से लगभग 10 किमी0 अरावली पर्वतमाला से घिरे रणकपुर की सुरम्य गोद में बना आदिनाथ जिन मंदिर अपनी कला के लिए विख्यात है। लगभग 48000 वर्गफुट क्षेत्र में 36 सीढ़ियों से प्राप्त ऊँची कुरसी पर बने इस तिमंजले श्वेत संगमरमर से निर्मित जिनभवन में 1444 स्तम्भ, 44 मोड़, 24 मण्डप, 54 देवकुलिकायें हैं। लगभग डेढ़ हजार स्तम्भ होने पर भी तारीफ यह है कि किसी ओर और कहीं से भी मूलनायक (मुख्य जिनमूर्ति) के दर्शन में ये स्तम्भ बाधक नहीं बनते।

इसका निर्माण शिल्प सम्राट् दीपा की देख-रेख में हुआ और पूरा बनने में 65 वर्ष लगे। इसके निर्माता महाराणा कुम्भा के कृपापात्र सेठ धन्नाशाह पोरवाल थे, जिन्होंने महाराणा से ही 1433 ई0 में इस मन्दिर का शिलान्यास कराया था। स्वयं राणा ने 12 लाख रुपये अनुदान दिया था। लगभग 90 लाख स्वर्ण मुद्रायें उस जमाने में व्यय हुई थीं। सेठ धन्नाशाह के जीवनकाल में यह पूरा नहीं हो सका तब उनके पुत्र सेठ रतनाशाह ने इसे पूर्ण कराकर 1498 ई0 में प्रतिष्ठा कराई थी। भारत सरकार ने रणकपुर मंदिर पर 14 अक्टूबर, 2009 को डाक टिकट जारी किया है।

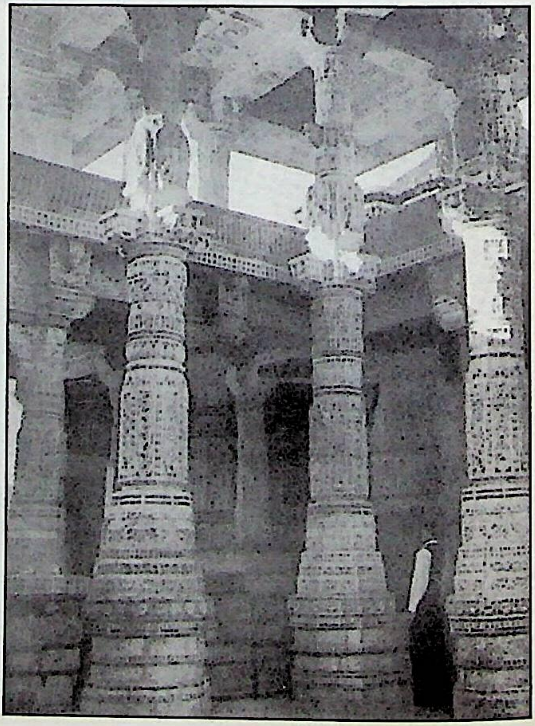

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिल्ली का ऐतिहासिक लाल मंदिर

भारत के हृदय स्थल दिल्ली और दिल्ली के हृदय स्थल चांदनी चौक में लालकिले के सामने जैनों का प्रसिद्ध लाल मंदिर है। इसका निर्माण सत्रहवीं सदी के पूर्वार्ध में शाहजहाँ के शासन काल में हुआ था, जो लाल पत्थरों से निर्मित है और अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात है। इसका दूसरा नाम उस समय उर्दू मन्दिर (उर्दू का अर्थ सेना की छावनी है) या लश्करी मंदिर भी था क्योंकि वह शाही सेना के जैन सैनिकों एवं अन्य राजकर्मियों को पूजा अर्चना के लिए उनकी प्रार्थना पर सम्राट् के प्रश्रय में उनकी अनुमति पूर्वक बना था।

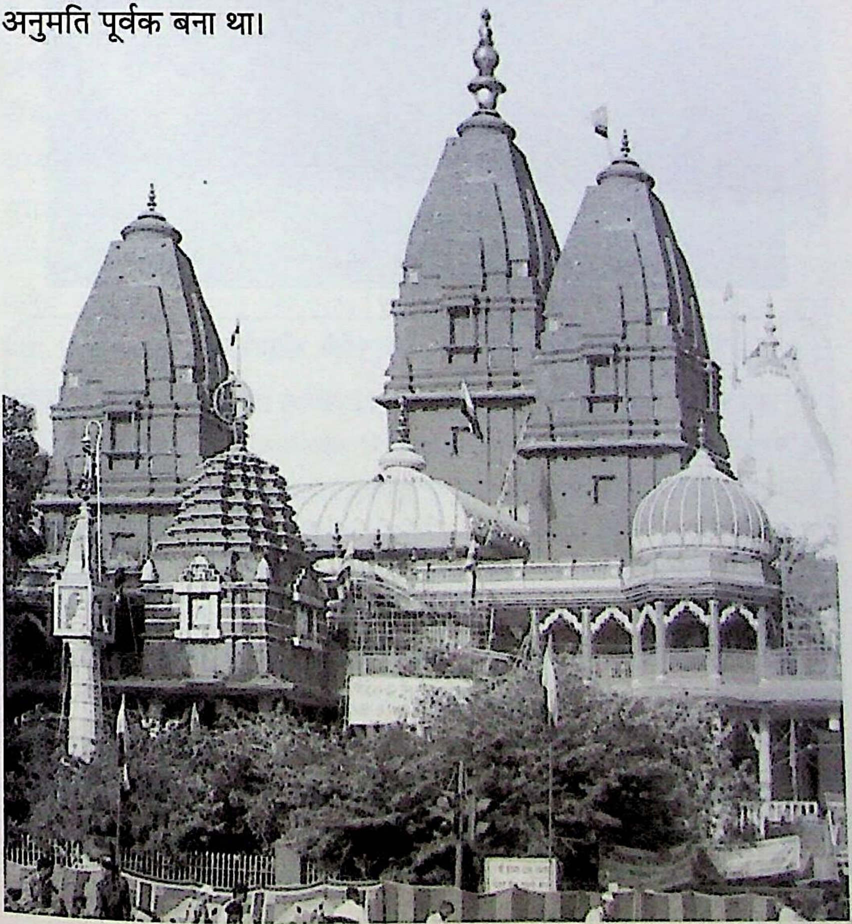

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐलोरा की गुफाएँ

भारत की प्राचीन धरोहरों में ऐलोरा की गुफायें हैं। 34 में से 05 गुफायें जैन गुफायें हैं, इनमें 15 फीट की ऊँचाई तक की जैन तीर्थंकरों और अन्य जैन देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं। इनके संरक्षण की महती आवश्यकता है।

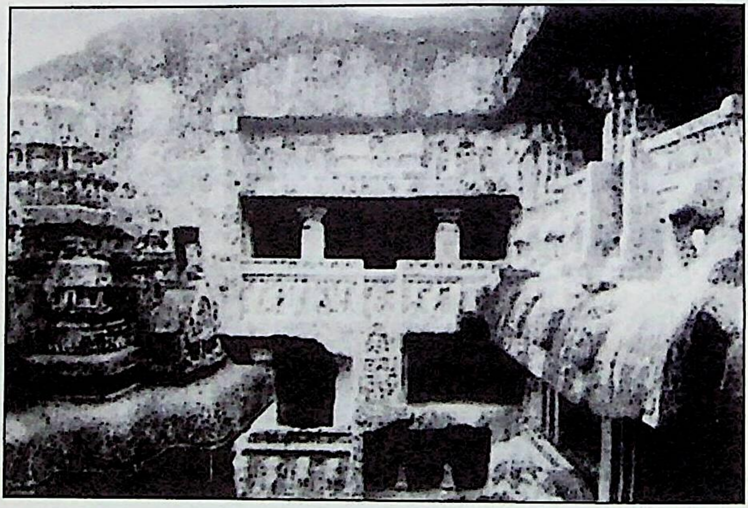

"मैं नहीं सारा राष्ट्र जैन है" - प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

बात फरवरी 1981 की है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी श्रवणबेलगोला में 'भगवान् बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह' के अवसर पर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित कर दिल्ली लौट आई थीं। संसद में बहस के दौरान कुछ संसद सदस्यों ने उनकी इस यात्रा पर आपत्ति की तो श्रीमती गांधी ने कहा–"मैं महान् भारतीय विचारों की एक प्रमुख धारा के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने वहां गई थी, जिसने भारतीय इतिहास व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और स्वतंत्रता संग्राम में अपनाये गये तरीके भी इससे प्रभावित हुए हैं। गांधी जी भी जैन तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपारित अहिंसा व अपरिग्रह के सिद्धान्तों से प्रभावित हुए थे।"

इस पर एक संसद सदस्य ने व्यंग्य करते हुए प्रश्न किया कि–'क्या आप जैन हो गई हैं?' तब श्रीमती गांधी ने गर्जना के साथ उत्तर दिया–"केवल मैं ही नहीं सारा राष्ट्र जैन है, क्योंकि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और जैन धर्म अहिंसा में विश्वास रखता है। जैन धर्म के आदर्श के रास्ते को हम नहीं छोड़ेंगे" यह सुनकर प्रश्नकर्ता बगलें झांकने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूगोल की अनुपम रचना-जम्बूद्वीप

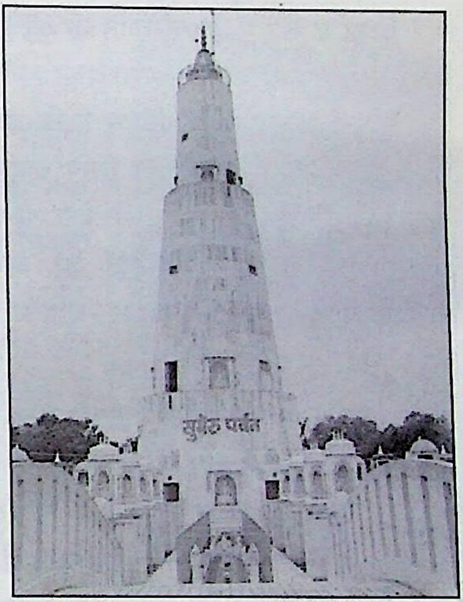

जैन भूगोल के अनुसार सृष्टि अनादि और अनन्त है, इसका कर्ता, भर्ता या संहारकर्ता कोई नहीं है। जैसे अन्तरिक्ष में उपग्रह बिना किसी आधार के हैं वैसे ही अलोकाकाश में लोकाकाश तीन वातवलयों के सहारे स्थिर है। लोक के ऊर्ध्व, मध्य और अधोलोक ये तीन भाग हैं। मध्यलोक में चूड़ी के आकार के असंख्यात द्वीप समुद्र हैं, जिनके बीच में थाली के आकार का जम्बूद्वीप है। जम्बूद्वीप के मध्य में सुमेरु पर्वत है। थाली के आकार के जम्बूद्वीप में भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत ये सात क्षेत्र हैं। इसमें पूर्व से पश्चिम तक फैले तथा ऊपर (चोटी) और तीचे (जड़) में समान विस्तार वाले रंग-बिरंगी मणियों से खचित हिमवन्, महाहिमवन्, निषध, नील रुक्मी और शिखरिन ये छह वर्षधर पर्वत हैं जिनके कारण इस द्वीप के सात क्षेत्र हो जाते हैं। भरत क्षेत्र में आर्यखण्ड है और आर्य खण्ड में भारतवर्ष देश है। जम्बूद्वीप में गंगा, सिन्धु आदि नदियाँ बहती हैं। जम्बूद्वीप को घेरे हुए लवण समुद्र है।

जैन और वैदिक पुराणों में जम्बूद्वीप का विस्तार से वर्णन हुआ है। यह बातें हमें और आपको जटिल और अटपटी लगती हैं, समझने में कठिनाई होती है। इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रखकर प.पू. गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा और आशीर्वाद से ऐतिहासिक स्थल हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना साकार हुई है। पाठकों को यथारुचि और सुविधानुसार इसके दर्शन कर जैन भूगोल की जानकारी लेना चाहिए। हस्तिनापुर जैन धर्म के सभी उपसम्प्रदायों में समान रूप से मान्य ऐतिहासिक स्थल है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन दर्शन का अनुपम ग्रन्थ-तत्त्वार्थसूत्र

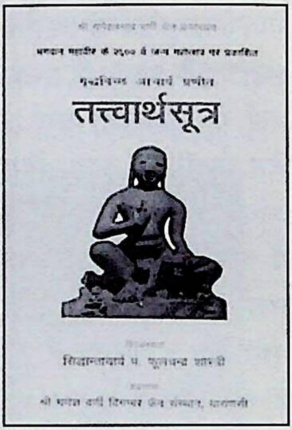

शिक्षा के क्षेत्र में जैन संस्कृति का अविस्मरणीय योगदान है। पुराणों के अनुसार तीर्थंकर आदिनाथ ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को सर्वप्रथम लिपि-ज्ञान दिया था इसलिए विश्व की प्राचीन लिपि ब्राह्मी कही जाती है। तीर्थंकर ऋषभदेव ने पुत्री सुन्दरी को अंकविद्या और अपने सौ पुत्रों को अर्थशास्त्र, अश्वशास्त्र, ज्योतिष, नक्षत्र विज्ञान, आयुर्वेद, धनुर्वेद आदि की शिक्षा दी थी।

ताड़पत्रों पर जैनागमों को लिखकर उनकी सुरक्षा का भगीरथ प्रयास दक्षिण भारत में हुआ, जहाँ आज भी हजारों वर्ष प्राचीन ताड़पत्रीय ग्रन्थ लाखों की संख्या में मौजूद हैं। एक ही पुस्तक की हजारों पाण्डुलिपियाँ लिखाने की कार्य जैन श्रेष्ठियों/श्रावकों/विद्वानों ने किया। तीर्थंकर भगवन्तों के अतिरिक्त श्री कृष्ण, राम आदि को आधार बनाकर सैकडों ग्रन्थ लिखे गये जो भारतीय साहित्य की अनुपम धरोहर हैं। भारत की वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जैनियों में साक्षरता का प्रतिशत सर्वाधिक है।

जैन साहित्य को प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग इन चार भागों में बांटा गया है। जैनों के सभी उप सम्प्रदायों में समान रूप से मान्य ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र है इसका अपरनाम मोक्षशास्त्र भी है। जो स्थान हिन्दू संस्कृति में रामायण का, इस्लाम में कुरान का, क्रिश्चियन में बाइबिल का है, वही स्थान जैनों में तत्त्वार्थसूत्र का है। इसमें जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्त्वों का विवेचन है। एक प्रकार से पूरा जैन दर्शन इसमें समा गया है। अनेक स्थानों पर तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णाक्षरों में लिखित पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं। सूत्र शैली में लिखित इस ग्रन्थ को अवश्य पढ़ना चाहिए। तीन लोक के आकार वाले जैन प्रतीक का आधार वाक्य ''परस्परोपग्रहो जीवानाम्'' इसी ग्रन्थ से लिया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

 ५९२४ सी

विदेशों में जैन मूर्तियाँ

जैन मूर्ति कला अत्यन्त समृद्ध रही है लघु और विशाल दोंनो तरह की मूर्तियों का निर्माण हुआ है। अनेक मूर्तियाँ आतताइयों द्वारा तोड़ डाली गईं तथा हजारों की संख्या में तस्करों द्वारा विदेशों में भेज दी गईं। विदेशों के अनेक संग्रहालयों में कलात्मक जैन मूर्तियाँ और पाण्डुलिपियां प्रदर्शित हैं। प्रतीक रूप में ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में प्रथम तीर्थंकर में ऋषभनाथ और अंतीम तीर्थंकर महावीर की यह कलात्मक मूर्ति दृष्टव्य है।

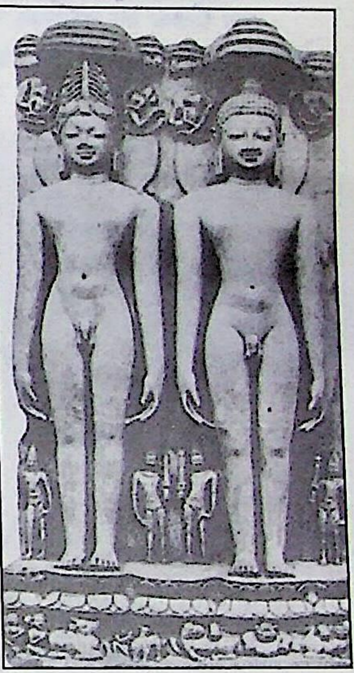

हमारी विदेश नीति महावीर के सिद्धान्तों पर आधारित है

भ. महावीर ने हमें अहिंसा का उपदेश दिया, जो आज भी विश्व के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना 2500 वर्ष पूर्व था। विश्व में मानवता के लिए इससे बड़ा सिद्धान्त नहीं हो सकता। अहिंसा का यह सिद्धान्त हमारे आजादी के आन्दोलन की शक्ति बना। गांधी जी, पं. जवाहर लाल नेहरू और इन्दिरा जी ने अपनी नीतियां बनाते समय जैन सिद्धान्तों की ओर देखा था। हमारी विदेश नीति भी महावीर के सिद्धान्तों पर ही आधारित है। चाहे नि:शस्त्रीकरण की बात करें या गुट निरपेक्षता की अथवा पर्यावरण सुधार की, यही सिद्धान्त हमारे सामने रहता है। जब हम चुनौतियों को देखते हैं, तो हमारे सामने एक ही रास्ता रह जाता है और वह है अहिंसा का। आज विदेशी शक्तियां भी महसूस करती हैं कि मानवता को बचाने के लिए अहिंसा ही एकमात्र रास्ता है।

–प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री

(18 अप्रैल 1989 को महावीर वनस्थली के उद्घाटन पर प्रदत्त भाषण का अंश)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन प्रतीक

इस प्रतीक का बहुतायत से अंकन होता है पर प्रायः आकार का नाप-अनुपात ठीक नहीं होता। इसे निम्न अनुपात में बनाएँ और प्रचारित करें ताकि सभी जगह यह ठीक बनने लगे।

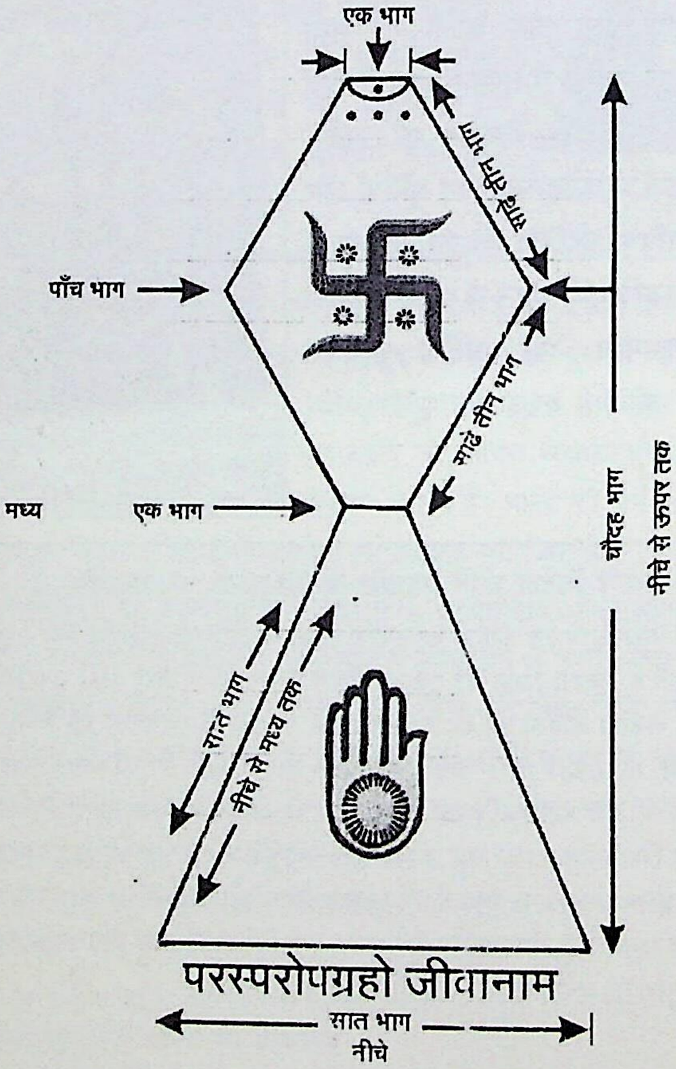

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक दम्पत्ति

डा. कपूर चन्द जैन

1954 में मध्य प्रदेश में जन्मे डा. कपूर चन्द जैन जैन इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं। महावीर, शास्त्री परिषद्, ऋषभदेव, सहजानन्द वर्णी, रइधू, आचार्य ज्ञानसागर आदि पुरस्कारों से सम्मानित डा. जैन की सात पुस्तकें तथा 50 से अधिक शोध निबन्ध प्रकाशित हैं। 'स्वतंत्रता संग्राम में जैन' तथा 'प्राकृत एवं जैन विद्या : शोध सन्दर्भ' उनकी बहुचर्चित कृतियाँ हैं।

डा. (श्रीमती) ज्योति जैन

रोटरी वोकेशनल, मातृवन्दना, रइधू, महावीर आदि पुरस्कारों से सम्मानित डा. ज्योति जैन की पाँच पुस्तकें तथा 150 से अधिक वैचारिक निबन्ध प्रकाशित हैं। वे अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन से जुड़ी हैं। 'स्वराज्य और जैन महिलायें', 'अमर जैन शहीद', उनकी बहुचर्चित कृतियाँ हैं। वे नारी कल्याण समिति, दिगम्बर जैन महासमिति, भारतीय जैन मिलन आदि से जुड़ी हैं।

भारतीय जैन मिलन

एकता की भावना को लेकर 21 जून 1953 को 'जैन मिलन' संगठन की स्थापना हुई। कालान्तर में 2 मई 1966 को 'भारतीय जैन मिलन' नाम देकर इसका पुनर्गठन किया गया। यह दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी व तेरहपन्थी सभी आम्नाओं का संगठित मंच है। वर्तमान में इसकी 800 से अधिक इकाईयां कार्यरत हैं। 'भारतीय जैन मिलन समाचार' नाम से मासिक पत्रिका भी निकलती है। संगठन जैन संस्कृति, साहित्य व एकता के लिए समर्पित है।

वीर सुरेश जैन 'रितुराज', राष्ट्रीय अध्यक्ष — **वीर जयचन्द जैन, राष्ट्रीय महामंत्री**

भारतीय जैन मिलन, क्षेत्र संख्या 07

भारतीय जैन मिलन, क्षेत्र संख्या 07 में हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर के क्षेत्र आते हैं। सभी पदाधिकारी व सदस्य मिलन भावना के अनुरूप मैडिकल कैम्प, नैतिक शिक्षा प्रचार, साहित्य प्रकाशन, विकलांग सहायता आदि कार्य बिना किसी भेदभाव के करते हैं। हमारा संकल्प है

मानवता की सेवा करना, दुखियों का दुख हरना। देना उन्हें सहारा, है संकल्प हमारा ॥

वीर अरविन्द कुमार जैन, क्षेत्रीय अध्यक्ष, अम्बाला
वीर पवन कुमार जैन, उपाध्यक्ष, सोनीपत
वीर आर. के. जैन, उपाध्यक्ष, यमुनानगर
वीर अजित प्रसाद जैन, क्षेत्रीय मंत्री, रेवाड़ी
वीर नरेश चन्द जैन, संरक्षक, प्रभारी मंत्री, सोनीपत
वीर ललित कुमार जैन, कोषाध्यक्ष, अम्बाला

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण, क्षेत्र संख्या-07

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi